यूसिल संवाद

प्रथम अंक
2020

राष्ट्र की सेवा में परमाणु
यू सी आई एल
UCIL
ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION

यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

(भारत सरकार का संस्थान)

जादूगोड़ा, जिला : पूर्वी सिंहभूम, पिन-832 102, झारखण्ड, भारत

अणुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय सूची	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
01.	संदेश - डॉ. सी.के.असनानी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, यूसिल		1
02.	संदेश - श्री डी. घोष, निदेशक (वित्त), यूसिल		2
03.	संपादकीय		3
04.	संपादन		4
05.	यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति		5
06.	यूसिल राजभाषा विभाग की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण		6-7
07.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सन् 2020 में सम्मानित		8
08.	हास्य कवि सम्मेलन		9-10
09.	विभिन्न इकाईयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला		11-12
10.	विभिन्न इकाईयों में हिंदी सप्ताह का आयोजन		13
11.	हिंदी दिवस समारोह एवं यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक		14-15
12.	राजभाषा हिंदी की उपयोगिता	रामचन्द्र प्रसाद	16-17
13.	कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य	गाजिया हाँसदा	17-18
14.	राजभाषा हिंदी की उपयोगिता	रौशन कुमार	19-21
15.	बिडम्बना	बालकृष्ण मिश्रा	21
16.	पहचान	संजय हो	22
17.	जीवन चक्र	संजीवन कुमार दास	22
18.	कार्यालय में हिंदी में कार्य करने में परेशानी	अर्जुन कुमार साहू	23-24
19.	लालच से नहीं मेहनत से	रघुनाथ टुडू	24
20.	विप्लव बेला	आदित्य कुमार	25
21.	यूसिल है शान हमारी	श्रीनिवास कुमार	25
22.	कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य	रोमियो बास्के	26
23.	रिटायर्ड आदमी	सुमित्रा अधिकारी	27
24.	जीवन का आनन्द लो	सुमित्रा अधिकारी	28
25.	बेटियों के नाम	संयुक्ता कुमारी	28

क्र.सं.	विषय सूची	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
26.	प्रेरणादायक विचार	बीना के. एल.	29
27.	पैसा की मुँह जुबानी	डॉ. बबीता शॉ	29
28.	हिंदी की उपयोगिता	तापस कुमार माझी	30-32
29.	बिखरते रिश्ते बिखरता परिवार	काशीनाथ चौधरी	33-34
30.	विकास का द्वार	काशीनाथ चौधरी	35
31.	इस महामारी का क्या कोई अंत है ?	काशीनाथ चौधरी	35
32.	सब कुछ बदल गया	सौरभ कुमार सिंह	36
33.	कोरोना और पर्यावरण	शकुंतला समद	37
34.	कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य	हेमलता पी. शिरोडकर	38-39
35.	प्रेम, समाज और कोरोना	रंजीत प्रसाद	40
36.	कोरोना वाइरस	भेलानाथ गोराई	40
37.	कोरोना – एक निःशब्द घातक	मनोरंजन भकत	41
38.	एक ज्वलंत प्रश्न	मनोरंजन भकत	41
39.	आज का कोविड-19 का प्रभाव	अशोक कुमार कर	42
40.	जिंदगी	बि. वरूण कुमार रेड्डी	42
41.	कोरोना	एस. अतिया	42
42.	राजभाषा हिंदी	पी. मेत्यानंद	43
43.	कोरोना का संहार	गोपीनाथ दास	44
44.	मन की व्यथा	नयना कुमारी	44
45.	कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य	जगदीश कुमार दास	45-46
46.	कविता	जगदीश कुमार दास	47
47.	कविता	जगदीश कुमार दास	47
48.	कविता	जगदीश कुमार दास	48
49.	हिन्दी सप्ताह में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता		49-53
50.	गणतन्त्र दिवस समारोह – 2020		54
51.	स्वतंत्रता दिवस समारोह – 2020		55

—X—X—X—

यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि०
(भारत सरकार का संस्थान)
परमाणु उर्जा विभाग

URANIUM CORPORATION OF INDIA LTD.
(A Govt. of India Enterprises)
Department of Atomic Energy

An ISO 9001 : 2008, ISO 14001 : 2004, IS 18001 : 2007 Company
CIN : U12000 JH 1967 GOI 000806

डॉ. सी.के.असनानी / Dr. C. K. Asnani
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक / Chairman & Managing Director

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि यूसिल राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी पत्रिका "**यूसिल संवाद**" नाम से प्रथम अंक (वर्ष 2020) का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए यूसिल के राजभाषा विभाग एवं सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ।

यूसिल राजभाषा विभाग द्वारा यह कोशिश अत्यंत संतोषजनक है। इस पत्रिका में यूसिल के कर्मचारियों की रचनात्मकता को स्थान देने के लिए पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय कार्य है। यह पत्रिका यूसिल कर्मचारियों में सृजनात्मक लेखन कौशल को बढ़ावा देने एवं उनके विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनेगी। यूसिल इस प्रकार राजभाषा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए राजभाषा नीति का अनुपालन भी सुनिश्चित कर रहा है।

मैं इस अवसर पर हिन्दी पत्रिका "**यूसिल संवाद**" के प्रवेशांक की सफलता की कामना करता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संगठन के राजभाषा कार्यान्वयन समिति, संपादक मंडल एवं सभी कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

प्रथम अंक के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

सी. के. असनानी

(डॉ. सी. के. असनानी)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/
अध्यक्ष, यूसिल रा. भा. का. स.

जादुगोड़ा माइन्स, सिंहभूम (पूर्वी), झारखण्ड – 832102 JADUGUDA MINES, Singhbhum (East), Jharkhand - 832102
Phone : 0657-2730348, Fax : 0657-6540659, 2731048
E-mail : asnani@uraniumcorp.in / cmdsect@uraniumcorp.in, Website : www.uraniumcorp.in

देबाशीष घोष निदेशक (वित्त)
Debashish Ghosh Director (Finance)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि यूसिल राजभाषा विभाग के सौजन्य से वार्षिक पत्रिका "यूसिल संवाद" के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए काफी समय से प्रयास किया जा रहा था ।

राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय है । इस पत्रिका के माध्यम से यूसिल कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के लिए यथोचित मंच प्राप्त होगा तथा राजभाषा का प्रचार-प्रसार भी होगा । हिन्दी एक सरल एवं मधुर भाषा होने के साथ-साथ देश के जनमानस की आम भाषा भी है ।

यूसिल की वार्षिक पत्रिका "यूसिल संवाद" के प्रकाशन का निर्णय अत्यंत प्रशंसनीय है तथा यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगी । इस प्रयास के लिए राजभाषा कार्यालय एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

मैं हिन्दी पत्रिका "यूसिल संवाद" के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा इससे जुड़े सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ ।

डी घोष

(देवाशीष घोष)
निदेशक (वित्त) /
कार्यकारी अध्यक्ष,
यूसिल रा. भा. का. स.

संपादकीय

यूसिल राजभाषा विभाग के लिए यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है कि विभाग द्वारा ''**यूसिल संवाद**'' नाम से हिंदी पत्रिका (वर्ष 2020) का प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

इस पत्रिका के लिए यूसिल के कर्मचारियों और अधिकारियों ने अपनी रचनाएँ भेजकर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में नैतिक दायित्व का निर्वाह किया है ।

जैसा कि सबों को विदित है कि झारखण्ड ''क'' क्षेत्र के अंतर्गत आता है तथा राज्य के सरकारी काम-काज की भाषा भी हिंदी है । इस नज़रिए से उद्यम में हिंदी भाषा को अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए । कर्मचारियों को इस पत्रिका के लिए अपनी रचनायें प्रस्तुत करने का सुनहरा अवसर मिला एवं यूसिल संवाद आगे भी उत्कृष्ट रचना लिखने को प्रेरित करता रहेगा ।

राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता से जुड़ी चीजों से हमें भावनात्मक लगाव होता है । राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा उठाए कदम सराहनीय है । ई-पत्रिका का प्रकाशन इसी प्रयास का परिणाम है ।

यूसिल कार्यालय के पत्राचार में हिंदी लिपि की बढ़ती लोकप्रियता समिति के सार्थक प्रयास से ही संभव हो पाया है । आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी हिंदी की महत्ता कम नहीं हुई है । गत् वर्ष की महामारी में हम सबों से अलग रहकर भी एक होने की जरूरत का एहसास कराया ।

हिंदी पत्रिका ''**यूसिल संवाद**'' के प्रवेशांक के प्रकाशन हेतु प्रोत्साहन के लिए यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति के माननीय अध्यक्ष, कार्यकारी अध्यक्ष, सभी सदस्यों एवं इससे जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद । भविष्य में हिंदी को प्रासंगिक बनाने हेतु शुभकामनाएँ ।

(महेश्वर तिवारी)
उप महाप्रबंधक (सिविल)
जादूगोड़ा

संपादन

श्री महेश्वर तिवारी
उप महाप्रबंधक (सिविल)

श्री डी. एस. यादव
अधीक्षक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

श्रीमती बीना के. एल.
सहायक हिंदी अधिकारी

नोट : प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं ।
यह आवश्यक नहीं कि संपादक मंडल की सहमति हो ।

यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति

01.	डॉ. सी. के. असनानी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	अध्यक्ष
02.	श्री डी. के. घोष, निदेशक (वित्त)	कार्यकारी अध्यक्ष
03.	श्री राजेश कुमार, महा प्रबंधक (भण्डार एवं क्रय/मिल सुरक्षा)	सदस्य
04.	श्री एस. के. शर्मा, महा प्रबंधक (इंस्टु./का. एवं औ. सं./परियोजना)	सदस्य
05.	श्री उदय कुमार, महा प्रबंधक (मिल) तुरामडीह – 31-01-2021 तक	सदस्य
06.	श्री वी. के. सिंह, महा प्रबंधक (सिविल) - 31-10-2020 तक	सदस्य
07.	श्री मनोज कुमार, महा प्रबंधक (जादुगोड़ा खान समूह)	सदस्य
08.	श्री रवीन्द्र कुमार, उप महा प्रबंधक (क्रय)	सदस्य
09.	श्री प्रभाष रंजन, उप महा प्रबंधक (यांत्रिकी)	सदस्य
10.	श्री महेश्वर तिवारी, उप महा प्रबंधक (सिविल)	सदस्य
11.	श्री आर. के. मिश्रा, उप महाप्रबंधक (पर्यावरण अभियंत्रण)/विभागाध्यक्ष (सिविल)	सदस्य
12.	श्री मनोरंजन महाली, मुख्य अधीक्षक (खान)	सदस्य
13.	श्री एस. के. सेनगुप्ता, मुख्य प्रबंधक (कार्मिक/इंस्ट्रुमेंटेशन)	सदस्य
14.	श्री के. के. राव, मुख्य अधीक्षक (खान)	सदस्य
15.	श्री जी. सी. नायक, मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा/प्रशासन एवं औ. सं.) 31-3-2021 तक	सदस्य
16.	डॉ. पी. के. ताम्रकार, मुख्य अधीक्षक (सी.आर. एण्ड डी.)	सदस्य
17.	श्री नरेश मिश्रा, प्रबंधक (लेखा)	सदस्य
18.	श्री डी. हाँसदा, प्रबंधक (कार्मिक), खान	सदस्य
19.	श्री जी. के. गुप्ता, प्रबंधक (कार्मिक)	सदस्य
20.	श्री विनय पाण्डेय, अपर प्रबंधक (प्रणाली)	सदस्य
21.	श्री कल्याण नाथ, अपर अधीक्षक (खान)	सदस्य
22.	श्री स्टेनली हेम्ब्रम, अपर प्रबंधक (कार्मिक एवं कॉ. सं.)	सदस्य
23.	श्रीमती पूर्णिमा देवी कंचम, उप प्रबंधक (कार्मिक) - 12-4-2021 तक	सदस्य
24.	श्री डी. एन. सिंह, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (कार्मिक)	सदस्य
25.	श्रीमती बीना के. एल., सहायक हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

वर्ष 2020 के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा किये गये कार्यों तथा गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण

वर्ष 2020 में यूसिल राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी का प्रचार प्रसार बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । इन कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के राजभाषा विभाग द्वारा नरवापहाड़ स्थित भाभा सभागृह में दिनांक 15-02-2020 को हिन्दी भाषा में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । जिसमें छत्तीसगढ़, यूपी एवं दिल्ली से कवियों/कवयित्री को आमंत्रित किया गया था । यूसिल के निदेशक (वित्त) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, श्री डी. घोष, के कर-कमलों से इस कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया गया । उपस्थित श्रोतागणों ने इस हास्य कवि सम्मेलन का भरपूर आनंद लिया तथा सभागार अत्यंत आनंदमयी वातावरण में बदल गया था ।

यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड में प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन विभिन्न इकाइयों में किया गया । यूसिल के जादुगोड़ा मिल स्थित साईट आफिस के सभाकक्ष में दिनांक **18-03-2020** को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परमाणु ऊर्जा केन्दीय विद्यालय, जादुगोड़ा के हिन्दी अध्यापक, श्री संतोष कुमार खरवाल के द्वारा **राजभाषा के संवैधानिक प्रावधान** विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई । कार्यशाला में कुल 23 कर्मचारियों ने भाग लिया जिसमें 05 अधिकारी और 18 कर्मी शामिल थे । श्री एस. के. शर्मा, महा प्रबंधक (इंस्ट्रु./कार्मिक एवं औ.सं.) के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया गया ।

यूसिल तुरामडीह इकाई के प्रशासनिक भवन स्थित सम्मेलन कक्ष में दिनांक **09-06-2020** को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में श्री विनय पाण्डे, अपर प्रबंधक (प्रणाली), ईंस्ट्रु.-तुरामडीह ने **कम्प्यूटर में यूनिकोड के जरिए हिन्दी में काम काज** करने का प्रशिक्षण दिया । कुल 11 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया जिनमें 03 अधिकारी और 08 कर्मी थे । कार्यशाला का शुभारंभ श्री एन. पाटिल, उप-महाप्रबंधक (सिविल)-तुरामडीह एवं अन्य आमंत्रित अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया । यूनिकोड से हिंदी में कितनी आसानी से काम करने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई तथा इसका भरपूर लाभ प्रतिभागियों ने भी लिया ।

दिनांक **05-08-2020** को यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नरवापहाड़ इकाई के प्रशासनिक भवन स्थित सम्मेलन कक्ष में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में 04 अधिकारियों और 09 कर्मचारियों सहित कुल 13 लोगों ने भाग लिया । इस कार्यशाला में श्री धनुर्धर झा, पी.जी.टी. (हिन्दी), पऊवि के द्वारा **हिन्दी भाषा में आधिकारिक पत्राचार** विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई । दीप प्रज्जवलित कर कार्यशाला का शुभारंभ श्री मनोज कुमार, महाप्रबंधक (जादुगोड़ा खान समूह) एवं आमंत्रित अतिथियों के द्वारा किया गया । सभी प्रतिभागियों ने कार्यालय में हिंदी भाषा में पत्राचार संबंधित जानकारी हासिल किये ।

दिनांक 04-12-2020 को यूसिल जादुगोड़ा मिल स्थित सम्मेलन कक्ष में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में कुल 16 लोगों ने भाग लिया । इस कार्यशाला में परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, खासमहल, जमशेदपुर के श्री रितेश रंजन, जे.टी.ओ. ने **राजभाषा नीति** विषय पर विस्तृत जानकारी दिये । दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ श्री उदय कुमार, महाप्रबंधक (मिल) एवं आमंत्रित अतिथियों के द्वारा किया गया ।

यूसिल के सभी इकाइयों (जादुगोड़ा, नरवापहाड़, तुरामडीह एवं तुम्मलापल्ली) में हिन्दी सप्ताह दिनांक 14-09-2020 से 21-09-2020 तक मनाया गया । हिन्दी दिवस के उपलक्ष में अध्यक्ष महोदय, श्री सी. के. असनानी ने सभी सदस्यों को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार को बढ़ाने हेतु और अधिक प्रयास करने का विचार व्यक्त किये । हिन्दी दिवस के अवसर पर गृह मंत्री एवं अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग व सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा प्राप्त संदेश पढ़ा गया । इसमें यूसिल के निदेशक (तकनीकी) को भी विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया । सदस्य सचिव ने वर्ष 2019-2020 के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा किये गये कार्यों तथा उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण दिया तथा हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे – हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी समभाषण प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी स्वरचित कविता प्रतियोगिता एवं हिन्दी पत्र लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन के बारे में विस्तृत जानकारी दिये ।

यूसिल-तुम्मलापल्ली इकाई, जो कि अहिंदी भाषी तथा ग क्षेत्र के अंतर्गत आता है, में पहली बार हिन्दी सप्ताह मनाया गया तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया ।

यूसिल के विभिन्न इकाइयों में हिंदी संबंधी कार्यों का जायजा लेने के लिए दिनांक 21-03-2020 को कार्मिक विभाग (अधिकारी), दिनांक 11-09-2020 को कार्मिक विभाग, जादुगोड़ा मिल, दिनांक 16-06-2020 को सम्पदा विभाग, जादुगोड़ा तथा दिनांक 10-12-2020 को सुरक्षा विभाग, जादुगोड़ा का निरीक्षण किया गया ।

यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक त्रैमासिक (दिनांक 24-06-2020, 14-09-2020 एवं 29-12-202) आधार पर बैठक आयोजित की गयी जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा विस्तृत रूप से की गयी ।

कोविड-19 महामारी की स्थिति को मद्देनज़र रखते हुए तथा सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए उपरोक्त सभी कार्यक्रमों तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), जमशेदपुर इकाई, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2019-2020 के दौरान विभिन्न इकाइयों में हिन्दी कार्यशालाएँ आयोजित करने में उत्कृष्टता के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । यूसिल को यह पुरस्कार लगातार 7वें वर्ष मिला ।

—X—X—X—

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), जमशेदपुर द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण सामारोह

दिनांक 14 जनवरी, 2020

डॉ. इन्द्रनील चट्टोराज (निदेशक, राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर एवं अध्यक्ष, नराकास, जमशेदपुर), यूसिल के अधिकारीगण श्री एस. के. शर्मा, महाप्रबन्धक (यंत्र/कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध/परियोजना), एवं श्री बी. सी. गुप्ता, कंपनी सचिव को पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

हिन्दी हास्य कवि सम्मेलन की झलकियाँ

दिनांक 15 फरवरी, 2020

हिन्दी हास्य कवि सम्मेलन की झलकियाँ

दिनांक 15 फरवरी, 2020

हिन्दी कार्यशाला आयोजन, जादूगोड़ा

दिनांक 18 मार्च, 2020

दिनांक 4 दिसम्बर, 2020

हिन्दी कार्यशाला आयोजन

तुरामडीह

दिनांक 9 जून, 2020

नरवापहाड़

दिनांक 5 अगस्त, 2020

हिन्दी सप्ताह आयोजन

दिनांक 14 सितम्बर, 2020 – 21 सितम्बर, 2020

यूसिल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं हिन्दी दिवस समारोह का ऑनलाइन आयोजन

दिनांक 14 सितम्बर, 2020

कोविड–19 से सुरक्षा हेतु जागरुकता संदेश का प्रचार–प्रसार

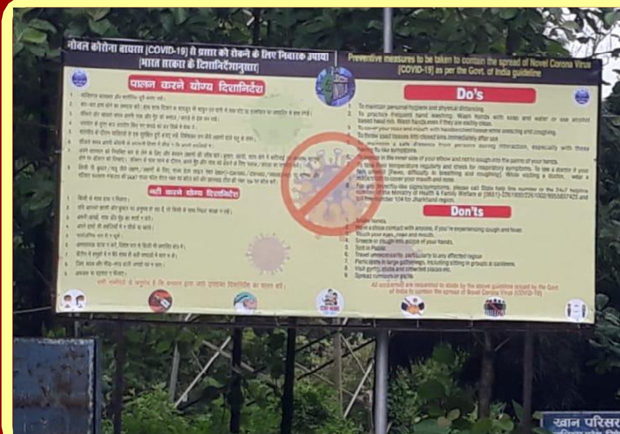

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में अपने विचारों के आदान-प्रदान हेतु उसे एक माध्यम की आवश्यकता होती है, जिसे हम भाषा कहते हैं । भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भाष् धातु से हुई है जिसका अर्थ है बोलना या कहना । इस प्रकार भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार लिखकर या बोलकर अभिव्यक्त कर सकता है ।

भारत एक बहुभाषीय देश है । यहाँ अनेकों भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं और एक कहावत खूब प्रचलित है –

कोस-कोस पर बदले पानी
चार कोस पर बानी ।

भारत वर्ष की विविधता और संस्कृतिक एकता को पूर्णतया व्यक्त करने में केवल एक भाषा ही सक्षम है, वह है हमारी हिन्दी । हिन्दी भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है । उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, उतरांचल, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में इसे राजभाषा का दर्जा हासिल है तथा अन्य राज्यों में यह द्वितीय राजभाषा या संपर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल की जाती है । इसलिए 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिला है ।

हिन्दी एक सशक्त भाषा है जो न केवल पूरे भारत में बोली या समझी जाती है बल्कि यह एक सुदृढ़ एवं समृद्ध भाषा भी है । हिन्दी के माध्यम से हम आज भी वेद, पुराण, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों के ज्ञान का लाभ प्राप्त कर पा रहे हैं । हिन्दी हमें सूरदास, कबीरदास, रहीम, रसखान, दिनकर, प्रेमचन्द, मैथिलीशरण गुप्त आदि के साहित्य से भी अवगत कराती है । हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है जिसे जैसे हम बोलते हैं उसी प्रकार लिखते, पढ़ते और समझते भी हैं ।

आज के परिवेश में हिन्दी की महत्ता भारत की सामाजिक एवं संस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए अति आवश्यक है । रूस, चीन, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि देश अपनी भाषा का उपयोग कर प्रगति की राह पर अग्रसर हैं तो हमें भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उपयोग को बढ़ाकर इसका मान सम्मान बढ़ाना चाहिए । भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने कहा है –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को भूल ।

आज भारत में लोग अंग्रेजी का प्रयोग कर अपने को पढ़ा लिखा दिखाने की कोशिश करते हैं और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों का प्रचलन तो काफी है । अंग्रेजी बोलना प्रतिष्ठा का विषय बन गया है परन्तु हमेशा याद रखना चाहिए सर्वथा अपनी भाषा में ही अपने विचारों की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति हो सकती है ।

हिन्दी विश्व में चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है । आज भारत में बहुत सी बहुर्राष्ट्रीय कंपनियाँ अपना पैर पसार रही हैं और भारत सबसे बड़ा उपभोक्ता देश है । इसलिए ये कंपनियाँ अपने व्यवसाय के प्रचार प्रसार हेतु हिन्दी का धड़ल्ले से उपयोग कर भारतीय उपभोक्ताओं को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रही हैं । हिन्दी का उपयोग हमारे फिल्मों, धारावाहिकों और हिन्दी गानों, भजनों, गजलों, कविताओं में बहुतायत होता है । हिन्दी अनेक प्रकार के रोजगार प्रदान करने में सक्षम है । विभिन्न विभागों में हिन्दी अधिकारी, लिपिक अनुवादक आदि के पदों पर भर्तियाँ की जा रही हैं । रेडियो जॉकी, डायलॉग राइटर, स्क्रिप्ट राइटर आदि को भारी भरकम तनख्वाह मिलती है । आज भी हिन्दी भाषा के उपयोग ने देशी एवं विदेशी कंपनियों के व्यवसाय को बढ़ाने तथा जन-जन तक पहुँचाने में काफी मदद की है ।

हिन्दी केवल हमारी राष्ट्र भाषा न होकर जन-जन की भाषा है । आज भारत के अलावा हिन्दी भाषा, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, फिजी, मॉरीशस, गयाना आदि देशों में बोली एवं समझी जाती है । ब्रिटेन, अमरीका, फ्रांस, ब्राजिल, कनाडा जैसे देशों में अप्रवासी भारतीय हिन्दी में ही एक दूसरे को सुनते और समझते हैं ।

अतः हमें भी अंग्रेजी जैसी भाषा को बढ़ावा देना छोड़कर अपनी हिन्दी के प्रचार प्रसार में लग जाना चाहिए और इसके अत्यधिक उपयोग पर ध्यान देना चाहिए । यदि भारत में अंग्रेजी का विकास होगा तो अन्य भारतीय भाषाएँ पिछड़ जाएँगी परन्तु हिन्दी के विकास से सभी भारतीय भाषाएँ साथ-साथ विकास की राह पर अग्रसर होंगी । हिन्दी भाषा अपने अन्दर सबको समावेशित होने का अवसर प्रदान करती है ।

'सबका साथ और सबका विकास ।''

अतः, हमें हिन्दी के प्राचर-प्रसार एवं विकास पर ध्यान देना चाहिए और हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह और हिन्दी पखवाड़ा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए । अतः हिन्दी को अधिक से अधिक प्रचलन में लाएँ और इसका मान सम्मान बढ़ाएँ । आखिरकार,

'हिन्दी' हैं हम, वतन है, हिंदोस्ताँ हमारा'

जय हिन्द, जय हिंदी ।

रामचन्द्र प्रसाद
प्रचालक 'स' (7376)
रसायन विभाग
मिल, यूसिल जादुगोड़ा

कोरोना महामारी में समाज का कर्त्तव्य

कोरोना एक जानलेवा महामारी है । यह चीन देश के वुहान लैब से प्रयोगशाला में विशेष परीक्षा के दौरान प्रयोगशाला से लीक होने के कारण पूरे विश्वभर में धुआँ की तरह फैल गयी है । हमारा देश भारत में इस महामारी से मरने वालों की संख्या विश्व का तीसरा स्थान प्राप्त कर चुका है । इस महामारी से बचने के लिए हर समुदाय के समाज को बढ़ चढ़कर आगे आने की आज की विशेष पुकार है । इस महामारी से निजाद पाने के लिए कम से कम दो गज की दूरी बनाये रखने के लिए हर समाज का अपना उत्तरदायित्व होना चाहिए ताकि कोरोना महामारी का श्रृंखला टूट सके । इस महामारी का लक्षण इस प्रकार से विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पाया है :

1. तेज बुखार आना
2. बार-बार छींक का आना
3. सूखा खाँसी का निरन्तर होना

यह सारी लक्षण पाये जाने पर पीढ़ित का स्वास्थ्य केन्द्र या अस्पताल या नजदीक चिकित्सक के पास परामर्श करने की आवश्यकता है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दृढ़तापूर्वक विश्वभर के नागरिकों को कोरोना से निजाद पाने के लिए निम्नलिखित स्वास्थ्य टिप्पणी दी है :

1. सामाजिक दूरी कम-से-कम दो गज की हो अति आवश्यक है ।
2. भीड़-भाड़ वाले जगह से प्रतिदिन बचे रहने का प्रयास कीजिए ।
3. घर से न निकले, घर से तब निकलें जब अति आवश्यक कार्य या अति आवश्यक सामग्री क्रय करना हो ।
4. बार-बार छींक आने पर स्वच्छ रूमाल या टिशु पेपर का उपयोग कीजिए यदि टिशु पेपर या रूमाल मौजूद न हो तो छींकते समय अपना हथेली का बार-बार व्यवहार में लाइये ।
5. किसी बन्धु या अधिकारी से हाथ न मिलायें, भारतीय सभ्यता का नमस्कार, प्रणाम, व्यवहार में लाने की परंपरा को निरंतर बनाये रखने की आवश्यकता है ।
6. घर से जब बाहर निकलें तो अवश्य मास्क पहनने की जरूरत है । यदि मास्क न हो तो स्वच्छ सफेद रूमाल का व्यावहार करने की आवश्यकता है ।
7. अपने हाथों को दिन में कम से कम पाँच बार 20 सेकेण्ड तक, साबुन से या हेण्डवाश से रगड़-रगड़ का धोने की आवश्यकता है । उसके तुरंत बाद हेण्ड सानीटाइजर का प्रयोग करने की आवश्यकता है ।
8. शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए हमेशा गरम पानी या दिन में पाँच बार गरम चाय या कॉफी का सेवन करना अति आवश्यक माना गया है ।

इन सारी सरकारी दिशा निर्देश उपयोगिता का अमल करते हुए पूरे भारत वर्ष के गाँव में रह रहे विभिन्न समाज के लोगों को, बुद्धिजीवियों को, समाज सुधारकों को, बढ़-चढ़ कर आगे आकर ही हर लोगों को सामाजिक दुरी दो गज बनाकर कार्यशाला करने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए दिन-ब दिन प्रचार प्रसार करने के साथ-साथ कोरोना महामारी से भय मुक्त कराने की जरूरत है, भारत सरकार या सब राज्य सरकार के जिला मुख्यालय कोरोना से निजात पाने के लिए प्रखण्ड स्तर, जिला स्तर बैनर दर्शाया गया है । उसमें बैनर में स्वच्छ रूप से लिखा गया है कि कोरोना महामारी के समय क्या करें, क्या न करें । भारत सरकार की इस महान मुहीम को साकार करने के लिए हर नागरिकों का अपना-अपना उत्तरदायित्व ही नहीं, बल्कि परम कर्त्तव्य बनता है कि अपने परिवार को, अपने समाज को, अपने संघ को एवं अपने राष्ट्र की सेवा के लिए वचन बद्ध होकर अपने भारत वर्ष को पूर्ण रूप से स्वास्थ्य बना सकते हैं ।

जय हिन्द, जय झारखण्ड, जय भारत ।

नाम : गाजिया हाँसदा

कर्मचारी संख्या : 15253

पदनाम : हेल्पर-सी

विभाग : (कार्मिक) नरवापहाड़

''राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता''

देश की प्रगति के गर्भ में हिन्दी भाषा का विशेष महत्व रहा है। हिन्दी दिवस हर साल 14 सितंबर को मनाया जाता है ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत की संविधान सभा ने घोषणा की कि देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी भारत की आधिकारिक भाषा गणराज्य है। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया है।

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक प्राणी अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। यह एक देवी शक्ति है जो मनुष्य को मानवता प्रदान करती है और उसका सम्मान तथा यश को बढ़ाती है जिसे वाणी का वरदान प्राप्त होता है वह बड़े से बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है और अक्षय कीर्ति का अधिकारी भी बन सकता है किंतु इस वाणी में स्खलन या विकृति आ जाने से मनुष्य निंदा और अपयश की भी भागी बनता है। यही नहीं अवांछनीय वाणी उसके पतन का भी कारण बन सकती है। अतः वाणी का भाषा का प्रयोग बहुत सोच विचार कर करना चाहिए। इसलिए राजकीय कार्यों में पूर्ण सोच विचार कर उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने की परंपरा रही है।

राज्य या प्रशासन की भाषा को राज्य भाषा कहते हैं। इसके माध्यम से सभी प्रशासनिक कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। यूनेस्को के विशेषज्ञों के अनुसार उस भाषा को राजभाषा कहते हैं जो सरकारी कामकाज के लिए स्वीकार की गई हो और जो शासन तथा जनता के बीच आपसी संपर्क के काम आती हो। जबसे प्रशासन की परंपरा प्रचलित हुई है तब से राजभाषा का प्रयोग किया जा रहा है। प्राचीन काल में भारत में संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भाषाओं का प्रयोग राजभाषा के रूप में किया जाता था। राजपूत काल में तत्कालीन भाषा हिन्दी का प्रयोग राजकाज में किया जाता था।

राजभाषा का महत्व :

किसी भी स्वाधीन देश के लिए जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है वहीं उतना राजभाषा का भी है।

प्रजातांत्रिक देश में जनता और सरकार के बीच भाषा की दीवार नहीं होनी चाहिए और शासन का काम जनता की भाषा में किया जाना चाहिए। जब तक विदेशी भाषा में शासन होता रहेगा, तब तक कोई भी देश सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता है। राजभाषा देश के भिन्न-भिन्न भागों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। इसके माध्यम से जनता न केवल अपने देश की नीतियों और प्रशासन को भलीभाँति समझ सकती है, बल्कि उसमें स्वयं भी ले सकती है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए ऐसी व्यवस्था होना अत्यंत आवश्यक है। विश्व के स्वतंत्र सभी देश और नवोदित राष्ट्रों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि उनका उत्थान उनकी अपनी भाषाओं के माध्यम से सम्भव है। रूस, जापान, जर्मनी आदि राष्ट्र इसके प्रमाण है। भारत की संविधान ने इस तथ्य से पूर्णतयः परीचित थे। यद्यपि अंग्रेजी के बड़े समर्थकों ने उसकी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति और समृद्धि की बड़ी वकालत की, फिर भी राष्ट्रीय नेताओं ने देश के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा बोली जाने वाली और देश के अधिकांश हिस्सों में समझी जाने वाली भाषा हिन्दी को भारत की संघ भाषा बनाया गया।

राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता :

हिन्दी को संघ की राजभाषा, 1950 में ही घोषित कर दिया गया था, किन्तु केन्द्र सरकार के कामों में हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान देने के लिए गंभीरता से प्रयास केन्द्र सरकार द्वारा 1960 विशेषकर राजभाषा अधिनियम, 1963 के पास होने के बाद से प्रारंभ किया गया। उस समय यह अनुभव किया गया कि हिन्दी के माध्यम से प्रशासन का कार्य चलाने के लिए कुछ प्रारंभिक तैयारियों की आवश्यकता पड़ेगी जैसे :

1. प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकि एवं विधि शब्दावली का निर्माण।
2. प्रशासनिक एवं विधि साहित्य का अनुवाद।

3. अहिन्दी भाषी सरकारी कर्मचारियों का हिन्दी प्रशिक्षण ।

4. हिन्दी टाईपराइटरों एवं अन्य यांत्रिक साधनों की व्यवस्था आदि ।

शब्दावली का निर्माण :

शब्दावली का निर्माण के लिए शिक्षा मंत्रालय ने 1950 में वैज्ञानिक एवं तकनीकि बोर्ड की स्थापना की गई । इसके माध्यम से शिक्षा मंत्रालय के हिन्दी विभाग ने तकनीकि शब्दावली निर्माण के कार्य चालू किया गया था । इसके बाद हिन्दी विभाग का विस्तार होते-होते सन् 1960 में केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय की स्थापना हुई । इसके कुछ समय बाद 1961 में राष्ट्रपति के आदेशानुसार वैज्ञानिक एवं तकनीकि शब्दावली आयोग की स्थापना हुई । निर्देशालय और आयोग ने अब तक आयुर्विज्ञान, इंजीनियरिंग, कृषि तथा प्रशासन आदि के 4 लाख अंग्रेजी के तकनीकि शब्दों का हिन्दी पर्याय प्रकाशित कर दिये हैं ।

प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद :

केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों के मेनुअलों, संहिताओं, फार्मों आदि का अनुवाद पहले शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय द्वारा किया जाता था । वर्ष मार्च 1971 से यह कार्य गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के अधीन स्थापित केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया है । ब्यूरो के निर्देशालय द्वारा अनुदित साहित्य के अतिरिक्त अब तक 3 लाख मानक पृष्ठों का अनुवाद करके विभिन्न मंत्रालयों को उपलब्ध करा दिया गया है ।

हिन्दी शिक्षण योजना :

केन्द्रीय सरकार के हिन्दी न जानने वाले सरकारी कर्मचारियों का हिन्दी प्रशिक्षण का कार्य, पहले शिक्षा मंत्रालय ने 1952 में प्रारंभ किया गया था, किन्तु बाद में लिए गए निर्णय के अनुसार सन् अक्टूबर 1955 से यह कार्य 1955 में गृह मंत्रालय के अधीन हो रहा है । प्रारंभ में यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उन लोगों के लिए था जो अपनी इच्छा से हिन्दी पढ़ना चाहते है । बाद में अप्रैल, 1961 में राष्ट्रपति के आदेश के अधीन एक हिन्दी सेवाकालीन प्रशिक्षण उन सभी केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य कर दिया जो 01-01-1961 से 45 वर्ष के नहीं हुए थे, फिर भी स्वेच्छा से हिन्दी सीखने वालों की तादाद अधिकतर जगहों पर इतनी व्यति थी कि राजभाषा विभाग ने इस अनिवार्यता का प्रयोग नहीं किया और हिन्दी प्रशिक्षण का कार्य सारे देश में स्वेच्छा और प्रोत्साहन के आधार पर किया जा रहा है ।

यांत्रिक साधनों की व्यवस्था : कुछ वर्ष पहले देवनागरी के टाईपराइटरों का उत्पादन मांग के अनुसार नहीं था, किन्तु अब औद्योगिक विकास विभाग, पूर्ति एवं निपटान महानिर्देशालय टाईपराइटरों बनाने वाली कंपनियों के प्रतिनिधियों के सहयोग से देवनागरी टाईपराइटरों में प्रगति हुई है । इस समय देवनागरी टाईपराइटरों का उत्पादन इस प्रकार है । वर्ष 1978 में 21753, वर्ष 1979 में 1386 और वर्ष 1980 में 12,754 देवनागरी टाईपराइटरों का उत्पादन हुआ है ।

कम्प्यूटर :

कम्प्यूटर में देवनागरी लिपि और भारतीय भाषाओं के प्रयोग की सुविधा के विकास के संबंध में इलेक्ट्रॉनिकी विभाग और इलेक्ट्रॉनिकी आयोग द्वारा विशेष कदम उठाए जा रहे हैं । कुछ वर्ष पहले ई.सी.आई.एल. हैदराबाद ने कम्प्यूटर में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रयोग के संबंध में एक प्रोटोटाईप बनाया है । कम्प्यूटर में देवनागरी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग की दृष्टि से कोड निर्धारित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिकी आयोग द्वारा विशेष कदम उठाए जा रहे हैं ।

इलेक्ट्रॉनिक टेलीप्रिंटर :

संचार मंत्रालय के अधीन एक सरकारी उपक्रम हिन्दुस्तान टेलीप्रींटर द्वारा इलेक्ट्रानिक टेलीप्रिंटर का निर्माण के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं । हिन्दी के बिजली से चलने वाले टाईपराइटरों, पतालेखी मशीनों और पीनप्वांइट टाईपराइटरों का निर्माण के लिए कार्यवाई की जा रही है ।

हिन्दी की मुद्रण क्षमता में वृद्धि :

भारत सरकार के प्रेसों की हिन्दी मुद्रण क्षमता कुछ समय पहले संतोषजनक नहीं थी । आवास तथा निर्माण मंत्रालय के सहयोग से मुद्रण निर्देशालय ने हिन्दी मुद्रण क्षमता बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किये हैं जो इस दिशा में काफी प्रगति हुई है । पहले हिन्दी मुद्रण क्षमता 400 पृष्ठ प्रतिदिन थी वो अब बढ़कर 1200 पृष्ठ प्रतिदिन तक पहुँच गई है ।

उपयुक्त विवरण से ज्ञात होता है कि राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास, प्रचार और प्रयोग में पर्याप्त वृद्धि हुई । किन्तु अभी हम अपेक्षित लक्ष्य तक नहीं पहुँच सके हैं । फिर भी विविध प्रयासों के परिणामस्वरूप हिन्दी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है ।

राजभाषा हिन्दी ने इसके विकास, प्रसार के लिए कुछ महत्वपूर्ण समितियाँ बनाई गई है जो इस प्रकार हैं :

1. केन्द्रीय हिन्दी समिति
2. हिन्दी सलाहकार समितियाँ
3. राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ

हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा उपयुक्त वातावरण न होने की है । प्रायः सभी सोचते है कि उनके बजाय किसी और को हिन्दी में काम करना है, लेकिन हिन्दी के विकास और प्रसार हो रहा है । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों व उपक्रमों में वार्षिक कार्यक्रम को पूरा करने का भरपूर प्रयास किया जा रहा है । भारत में सर्वाधिक काम करने वाले को शील्ड देने की व्यवस्था की गई है । इतना ही नहीं, हिन्दी में पर्याप्त काम करने वाले को हिन्दी प्रोत्साहन भी देने की योजना है । तात्पर्य यह है कि हिन्दी में काम करने का वातावरण बनाने के लिए हर संभव उपाय किए जा रहे हैं किन्तु हम अपने लक्ष्य से कुछ दूर अवश्य हैं किन्तु हम सब का सहयोग लेते हुए सशक्त और संतुलित कदमों से उसकी तरफ बढ़ रहे हैं ।

नाम : रौशन कुमार
कर्मचारी संख्या : 7581
विभाग : केमिकल-ए (मिल)
पद : हेल्पर-सी

''बिडम्बना''

आओ हम हिन्दी को ढुढ़े, घर-घर हर एक मकान में ।
डरे भी है, सहमी सी है, कहीं खो गई हिन्दुस्तान में ।।

इसके आँचल की ममता और कहाँ तुम पाओगे,
अंग्रेजी के दामन में, प्यार ढूंढ़ते रह जाओगे ।
कभी लहराता था परचम हिन्दी का जहान में ।।
डरी भी है, सहमी सी है .... (1)

संस्कृत की बेटी है ये, माँ भारती का ताज है,
हर कण आलोकित है इससे, जन-जन की आवाज है ।
है यही कामना, गुंजित हो ये, धरती आसमान में ।।
डरी भी है, सहमी सी है .... (2)

बैर हमें ना किसी भाषा से, करना किसी का अपमान नहीं,
पर कटु सत्य है, बिना हिन्दी के, हिंदी की पहचान नहीं ।
आओ हम सब एक दीप जलाएं, इस हिंदी की शान में ।।
डरी भी है, सहमी सी है .... (3)

कभी सुना है अंग्रेजों ने, अंग्रेजी दिवस मनाया हो,
और सुना क्या हिन्द कभी, हिन्दी पर इतराया हो ।
क्या दिमक लगी ''कृष्णा'', भाषा,
संस्कृति हमारे स्वाभिमान में ।।
डरी भी है, सहमी सी है .... (4)
आओ हम हिन्दी को ढुढ़े ......

- बालकृष्ण मिश्रा
कर्मचारी संख्या : 15464, नरवापहाड़

पहचान

मैं और मेरा दोस्त काफी वर्षों बाद मिले। उसका नाम मोहन और मेरा संजय है। मिलते साथ 'जोहार' किए यानि नमस्कार किए। मैं उससे मिलकर बहुत खुश था पर वह थोड़ा मायूस लग रहा था। मैंने पूछा, 'चेद लेका खोबोर' मतलब खबर कैसी है। उसने कहा, क्या बताऊँ, जिंदगी में बस परीक्षा ही परीक्षा है। घर में दीदी की अब तक शादी नहीं हुई है और बाबा बीमार हैं। उसने कहा, ''मैं जिंदगी से तंग आ गया हूँ।'' मैंने कहा, ''एक कहानी सुनाता हूँ बाज की। क्या तुम्हें मालूम है कि मादा बाज अपने बच्चे को दबोच कर आसमान में लगभग 12 किलोमीटर ऊँची उड़ सकती है ? जिस उम्र में दूसरे पक्षी ठीक से बोल नहीं पाते उस उम्र में बाज के बच्चे का कठिन अभ्यास शुरू होता है। मादा बाज लगभग 12 किलोमीटर से अपने बच्चे को नीचे छोड़ देती है। छोड़े जाने के दो किलोमीटर बाद तक उस बाज के बच्चे को मालूम नहीं होता कि उसके साथ क्या हो रहा है। पर 7 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद वह अपना पंख खोलने लगता है और लगभग 9 किलोमीटर के बाद उसके पंख फड़फड़ाने लगते हैं। पंख मजबूत नहीं होने के कारण वह उड़ नहीं पाता। तभी मादा बाज अपने बच्चे को पकड़ कर उसे बचा लेती है। और यह अभ्यास बाज के बच्चे को रोज करना पड़ता है जबतक की उसे खुद की पहचान ना हो जाए। और जब यह बाज बड़ा हो जाता है तब अपने से 10 गुणा वजनी प्राणी का शिकार करता है। बाज कभी छत की मुंडेर पर नहीं उड़ते, वे हमेशा आसमान की ऊँचाइयों में उड़ते हैं क्योंकि उन्होंने कठिन अभ्यास किया होता है। उसी प्रकार ईश्वर भी हमें कठिन परीक्षाओं से होकर गुजारता है ताकि हम मजबूत हो जाएँ और खुद को पहचान पाएँ। इस दुनिया के कागज या दस्तावेज हमें हमारी पहचान नहीं दिलाते बल्कि वह केवल प्रमाण है कि वर्तमान स्थिति में हमारी क्या पहचान है, चाहे वह विद्यार्थी हो, समाज में रहने वाला व्यक्ति हो या आम आदमी। वास्तव में उसकी स्वयं की पहचान तो तब होती है जब वह ईश्वर द्वारा तय की गई परीक्षाओं से गुजरता है और खुद को हर तरह से मजबूत पाता है। इन सारी बातों का मूल उसे समझ आया अब उसके चेहरे में खुशी की चमक थी। हम दोनों ने फिर जोहार किया और विदा हुए।

नाम – संजय हो
हेल्पर, कर्मचारी संख्या – 7788
कॉरपोरेट ऑफिस

जीवन चक्र

इस दर्द को बयान कैसे करें हम,
बेदर्द समाज ने किसे समझा है,
ख्वाहिशें दिलों में संजोय हुए,
जीवन के सफर में चलते चले हम।

जीवन के इस संघर्ष में हम,
मुश्किलें लाख सामने आए,
रुकना नहीं, बस चलते चले हम,
जीवन के इस कठिन घड़ी में हम।

मौसम का बदलते रहना,
चिड़ियों का चहकना,
बच्चों का खिलखिलाना,
यह देखकर हमने समझा,
मौसम का चक्र, जीवन का चक्र
कभी न रुकता, कभी न ठहरता,
जीवन के इस कठिन घड़ी में हम।

सोचता हूँ मैं, ठहरने में क्या मज़ा है,
फूलों सा सुगंध बिखेरते चले हम,
बस चलते चले हम, चलते चले हम।

नाम – संजीवन कुमार दास
पदनाम – एल.डी.सी./टाइपिस्ट
कर्मचारी संख्या – 7628
विभाग – सी.आर.डी. (जादुगोड़ा)

कार्यालय में हिन्दी में कार्य करने में परेशानी

कार्यालयी हिन्दी हमारी आवश्यकता से उत्पन्न एक शैक्षणिक संभावना है जो इस वक्त देश की हिन्दी शिक्षण को एक नया मोड़ दे सकती है । अब प्रश्न यह है कि किस तरह की हिन्दी, किस तरह की वर्त्तमान क्षमताओं और किस प्रकार के सहकर्मी को, किस विधि से, कितने समय व सामग्रियों द्वारा कार्य करने की प्रेरणा दी जाय ? मैथलीशरण् गुप्त जी की यह कविता द्रष्टव्य है यथा –

जिसमें न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है ।
वह नर नहीं पशु निरा,
और मृतक समान है ।

कार्यालयी हिन्दी की व्याख्या प्रशासकीय, सांस्कृतिक, व्यवसायत्मक तथा शैक्षिक आधारों पर होनी चाहिए । इसका उद्देश्य हमारे कर्मचारी, उद्योग एवं देश की जनता को लाभ पहुँचाना मात्र नहीं है अपितु ऐसे भारत का निर्माण करना है जिससे हमारी छवि विश्व में उभर सकें तभी हमारा प्रयास सार्थक होगा अन्यथा यह औपचारिकता बनकर रह जायगी । यहाँ भारतेन्दु की यह कविता बड़ी रमणीय प्रतीत होती है यथा –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल ।
बिन निजभाषा ज्ञान के मिटत न हिय कौ सूल ।

हम सभी जानते हैं और समझते हैं कि किसी भी देश की एकता और अखण्डता के लिए भाषा सेतु का काम करती है । वाकई क्या हम इस सेतु के लिए तत्पर हैं ? जरा अपने हृदय को टटोलिए और प्रश्न किजिए कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर क्या थीं और हम कहाँ आ गये । इसे यूँ व्यर्थ न जाने दें, विश्व से अपनी तुलना करें, फिर अब नहीं तो कब ?

अब हमारे समाने कार्यालय में न होने वाली परेशानी की बात रही, तो यह परेशानी अनुवाद की समस्या, पारिभाषिक अशुद्धियाँ । अशुद्धि के संदर्भ में जैसे रूपात्मक, बोधात्मक, प्रयोग एवं प्रयुक्तिपरक अशुद्धि जिनमें पुल्लिंग, स्त्रीलिंग की अशुद्धि, वर्णलेखन और वर्तनी, स्वर सम्बन्धी, व्यंजन, विसर्ग, शब्द निर्माण, वाक्य में अर्थगत एवं शब्दगत अशुद्धियाँ होती हैं । नाद सौन्दर्य में बदलाव से मूल भाषा के सौन्दर्य में कमी हो जाती है । निराला जी के कविता में शब्द–विन्यास सराहनीय है यथा –

''नव गति नव लय ताल छंद नव नवल कंठ नव जलद मंद्र नव
नव नभ के नव विहग वृंद को नव पर नव स्वर दे ।''

अहिन्दी भाषी का निराषाजनक योगदान, कार्यालय में सामग्री, रोजगार एवं प्रोत्साहन में कमी, अंग्रेजी की तरह हिन्दी में ऐप्स की कमी, शब्दकोश की कमी, सर्कुलर एवं नोटिस का हिन्दी–व्यवहारिक प्रयोग में कमी किन्तु इसके लिए जिम्मेदार कौन है ? मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या इसके हमने सही प्रयास किए हैं । सवाल यह नहीं है कि हिन्दी में किलिष्टता है अपितु इसके लिए जो हमने समिति बनाये हैं, वे पूर्णतः निर्मूल हो चुके हैं । कहने का तात्पर्य है कि वहाँ भी औपचारिकता मात्र हो रही है ।

भारत, विश्व में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के नाम से जाना जाता है । परन्तु अब भारत इजराइल के नक्शे–कदम पर चल पड़ा है । वह बारम्बार जवानों की शहीदों एवं आतंक गतिविधियों के लिए सरहद पार घुसकर, सर्जिकल स्ट्राइक करने की क्षमता रखता है । 370 एवं 35 A को खत्मकर यह विश्व को बतला दिया है कि हमें भी अपने देश पर स्वाभिमान है । इधर चीन को अच्छी तरह से समझा दिया है कि विस्तारवादी नीति अब नहीं चलेगी, अब विकासवाद का समय है

तो फिर हिन्दी भाषा लादने का प्रश्न ही नहीं उठता । अगर प्रश्न है तो आप हमें बतायें, है कोई ऐसी भाषा जो भारत में सम्पर्क सूत्रता का कार्य कर सकती है, अंग्रेजी या अन्य प्रादेशिक भाषा ।

अंत में मैं बड़ी विनम्रता के साथ कहना चाहता हूँ क्या यह सच नहीं कि हमारे अधिकारीगण नोटशीट या हिन्दी में लिखें निबन्ध, पत्र-लेखन के ऊपर हिन्दी में हस्ताक्षर करते हैं । ऐसी स्थिति, भारत को काल के ग्रास में संभावी रूप से ले जा रही है । आइए इस कविता के माध्यम से अपने देश के प्रति स्वाभिमान संकल्पना को दोहरायें -

भारत माता के माथे की,
झिल-मिल झिलमिल-सी बिंदी है ।
जन-जन जनमानस में प्रेम भरें,
मधुमय भाषा ये हिन्दी है ।

जय हिन्द जय भारत !

अर्जुन कुमार साहु
कर्मसंख्या - 7249
यूसील अस्पताल
तुरामडीह

लालच से नहीं मेहनत से

एक गाँव में दो दूध वाले रहते थे । एक का नाम राम और दूसरे का नाम श्याम था । राम मेहनती और श्याम आलसी था । राम जल्दी उठा करता था और अपनी गाय को चारा और पानी देता था और अपनी गाय की देखभाल भी करता था । राम की गाय ज्यादा दूध देती थी । राम जल्दी से दूध बेचने निकलता और सारा दूध बेच देता था । ग्राहक भी खुश रहते थे और राम भी खुश रहता था । वहीं दूसरी ओर श्याम आलसी होने की वजह से गाय का ध्यान नहीं रखता था जिससे उसकी गाय दूध कम देती थी । और कम दूध होने से श्याम दूध में पानी मिलाता था । इससे ग्राहक भी परेशान होते और समय पर दूध नहीं मिलने से ग्राहक भी किचकिच करते थे । इस तरह उसका दूध नहीं बिकता था और बच जाता था । श्याम सारा दोष गाय पर निकालता था । एक रात श्याम और उसकी पत्नी ने लालच में आकर राम की गाय चुराई और सुबह दूध जल्दी बेचने चला गया । उस दिन सारा दूध बेचकर ज्यादा पैसा लाया । अब वह हर रोज ऐसा ही करने लगा । राम सुबह उठता है और गाय को चारा देता है और दूध निकालता है । पर गाय दूध नहीं देती थी । राम को लगता था शायद गाय बीमार है । इस तरह दूसरे दिन भी दूध नहीं हुआ । श्याम सुबह-सुबह दूध बेचने निकल जाता है । राम चिंतित था तभी उसकी पत्नी ने आकर दूध चोरी की बात बतायी । उस रात उसने दूध चोरी होते देख ली थी । दूसरे दिन राम ने गाय की जगह बैल बाँध दिया । श्याम उस रात भी अपनी पत्नी के साथ चोरी करने आया और बैल को गाय समझ रात के अंधेरे में जल्दी-जल्दी दूध निकालने लगा । तभी बैल जोर से लात मारा और श्याम झटके से गिर गया । उसे काफी चोट लगी और वह दर्द से जोर-जोर चिल्लाने लगा । तभी राम और उसकी पत्नी आये । श्याम की चोरी पकड़ी गयी । उसे अपनी गलती का एहसास हो गया कि लालच से नहीं मेहनत से काम होता है । राम भी उसे माफ कर दिया ।

नाम - रघुनाथ टुडू
कर्मचारी संख्या -20424
पदनाम - हेल्पर बी.
कार्यालय पता - पर्या.

विप्लव बेला

अब जाग मनुज – 2
क्योंकि यह विप्लव बेला है ।
धर–धीर मनुज – 2
क्योंकि यह विप्लव बेला है ।

हर ओर मचा है हाहाकार
क्योंकि त्यागे हैं हमने संस्कार
कंचनता का परित्याग किया
मलीनता को अभिसार किया
सो जाग मनुज, अब जाग मनुज
क्योंकि यह विप्लव बेला है ।

उन्मुक्त गगन में उड़ते थे
स्वयं को ही विश्व समझते थे
अब दंश पड़ा जो प्रलयंकारी
औंधे पड़े हैं सब अत्याचारी

जीवन का ना है कोई मूल्य
राजा और रंक है समान तुल्य
अब जाग मनुज – 2
क्योंकि यह विप्लव बेला है ।

सारे जग को अब राह दिखा
उठ वीर अपनी सामर्थ्य दिखा
निशि के इस दावानल में
अपनी आशा के दीप जला

कर क्रांति का तू सूत्रपात
जो लाए नव जीवन का प्रभात
तामसता का तू करके त्याग
समरसता का तू बन प्रयाग

भौतिकता का तू लोभ ना कर
नैतिकता से विक्षोभ ना कर

धर–धीर मनुज – 2
क्योंकि यह विप्लव बेला है ।

नाम – आदित्य कुमार
पद – प्रयोगशाला सहायक–बी
कर्मचारी संख्या – 25268
विभाग – तूरामडीह मिल (27)

यूसिल है शान हमारी

भाभा के स्वपनों की रानी ।
जादुगोड़ा से शुरू कहानी ।।
भारत–भू के मानचित्र पर ।
यूसिल अपनी पहचान बनाई ।।

भूमिगत खदान, अल्हड़ चट्टान ।
पत्थर तोड़ते, मजदूर महान ।।
कड़ी मेहनत, खुन–पसीना ।
करते चौबीस–घंटे काम ।।

आधुनिक तकनीक, सुरक्षित काम ।
प्रदूषण मुक्त, हमारा खदान ।।
सुरक्षित यंत्र से सुसज्जित मजदूर ।
सर पर हेल्मेट, पाँव में गम्बुट ।।

पास–पड़ोस के गाँव में ।
शिक्षा और स्वास्थ्य की आधार ।।
शुद्ध पेयजल, मुफ्त इलाज ।
मिलता गाँव को साभार ।।

दूर शहर से गाँव में बसती ।
श्रम और सेवा पहचान हमारी ।।
मातृ परमाणु ऊर्जा विभाग की ।
यूसिल है शान हमारी ।।

श्रीनिवास कुमार
वैज्ञानिक सहायक–सी
कर्मचारी संख्या – 25269
स्वास्थ्य भौतकी इकाई
यूसील, तुरामडीह

कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य

जैसा कि हम सब जानते हैं, 2020 हमारे लिए एवं पूरे विश्व के लिए बड़ा ही कठिन और चुनौतियों से भरा साल रहा है और अभी भी इस विश्व के सारे लोग उस चुनौती से जूझ रहे हैं और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं । जाहिर सी बात है मैं इस चुनौती का अर्थ इस निबंध में कोरोना के महामारी से ही जोड़ने जा रहा हूँ । कोरोना महामारी के वजह से हमारे और कई सारे देशों में अनेक लोगों की जान गई, बहुत से लोग बीमार हुए, कोरोना का शिकार हुए, महीनों तक इस बीमारी से लड़ते रहे । जिन लोगों की प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा मजबूत थी, वे ठीक हो गए और कुछ अभी भी बीमारी के चपेट में हैं । यह बीमारी बूढ़े एवं बच्चों को ज्यादा नुकसान पहुँचा रहा है और जैसा की इस बीमारी के लिए अभी तक कोई वैक्सीन नहीं बन पाया है, उस वजह से लोगों की हालत और अधिक खराब होती जा रही है और कोई खास सुधार नहीं देखा जा रहा है । ऐसे कठिन समय में हम सभी को, हमारे समाज के लोगों को एकजुट होने की, धैर्य रखने और सरकार के नियमों का पालन करने की आवश्यकता है ।

इस कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप के वजह से ही सरकार को आम लोगों के लिए अनेक सारे नियम बनाने पड़े । यह सारे नियम हमारे देश के आम लोगों की भलाई और उन्हें इस बीमारी के प्रकोप में आने से बचाने के लिए ही बनाए गए न कि लोगों की परेशानियों को बढ़ाने के लिए । इस कोरोना महामारी के वजह से सरकार को सभी दफ्तर, विद्यालय, मॉल, दुकानें, एकैडमी और कई सारी ऐसी जगहों को बंद करना पड़ा जहाँ सामूहिक स्तर पर लोगों का आना जाना होता हो, साथ ही साथ सरकार को बस और ट्रेनों को भी रद्द करना पड़ा जो की सिर्फ इसलिए किया गया ताकि इस बीमारी को और अधिक फैलने से रोका जा सके । हर देश में कोरोना के मरीज बढ़ते जा रहे हैं और यही हमारे देश भारत के साथ भी हो रहा है । देश में कोरोना के मरीजों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है और मरीजों की संख्या कम होने का नाम ही नहीं ले रही है ।

सभी अस्पतालों में भारी मात्रा में मरीज भर गए हैं और मरीजों को बेड मिलने में भी दिक्कतें आ रही हैं । ऐसी कठिन अवस्था में हमें भला क्या करना चाहिए ? सबसे पहले तो सरकार की बात माननी होगी और सरकार के सभी नियमों का पालन करना चाहिए । सरकार ने इस कोरोना महामारी के वजह से ही लॉकडाउन की घोषणा की थी और देश वासियों के भलाई के लिए ही की थी । हममें से कई लोग इस लॉकडाउन के नियमों का पालन सही से नहीं कर रहे, और न मुँह पर मास्क लगाकर बाहर जा रहे । ऐसी परिस्थिती में तो मुँह पे मास्क लगाना अनीवार्य है ही साथ ही साथ हैन्ड-सैनिटाइजर का इस्तेमाल करना एवं लोगों से 1 मी. की दूरी बनाकर रखना भी जरूरी है ।

लॉकडाउन में सभी लोगों को घर पर रहना पड़ रहा है, जिससे लोगों को समस्या हो रही है और वे घर के अंदर रह नहीं पा रहे हैं । कई लोग सरकार के ऐसे नियमों के होते हुए भी नियमों का उलंघन कर रहे हैं और घर से बाहर निकल रहे हैं । ऐसा करने से लोगों में कोरोना की बीमारी फैलने और संक्रमण होने की संभावना बढ़ती जा रही है ।

लेकिन इन सारी चीज़ों को अब भी कम किया जा सकता है, क्योंकि सिर्फ सरकार का फर्ज नहीं है लोगों की रक्षा करना, हमारा भी फर्ज है सरकार के बनाए हुए नियमों का पालन करना, क्यों कि जब तक वैक्सीन नहीं बन जाता तब तक यही एक उपाय है जिससे हम कोरोना महामारी के संक्रमण को फैलने से कम कर सकते हैं और दूसरे लोगों को भी इस बीमारी के चपेट में आने से बचा सकते हैं । अतः जब तक वैक्सीन नहीं बन जाता तब तक हमें सरकार के नियमों का पालन करना चाहिए एवं धैर्य से काम लेकर अपने हाथों को समय पर अच्छे से धोना, लोगों से 1 मी. दूरी बनाकर रखना एवं बहुत जरूरी कार्य होने पर घर से मास्क लगाकर ही निकलना चाहिए । सरकार अगर अपना काम कर रही है तो हमें उन्हें सहयोग देना ही हमारा सबसे प्रथम कर्तव्य है ।

धन्यवाद ।

नाम : रोमियो बास्के
कर्मचारी संख्या : 16015
विभाग : कार्मिक विभाग

रिटायर्ड आदमी

रिटायर क्या हुआ, जैसे सरकार ही गिर गई ।
सात जन्मों की साथी भी, रूलिंग पार्टी से मिल गई ।
पत्नी कहती है, दिन भर कुर्सी तोड़ते हो ।
मोबाइल में आंखे फोड़ते हो, जाओ बाजार से,
कुछ सामान ही ले आओ ।
सोचता हूँ, रिटायरमेन्ट के बाद, ऐसा क्या हो जाता है ?
उसकी सलाह मशविरा, निरर्थक हो जाती हैं ।
आफिस का बॉस, घर में जगह नहीं पाता है ।

बड़े शौक से जिन्दगी की पूँजी
लगाकर घर बनवाया था ।
रिटायरमेंट के बाद सुख-शान्ति
से रहने के लिए, पर यह क्या हुआ,
छोटे बेटे की शादी हुई !
अपना कमरा छोड़ना पड़ा
बरामदे के एक कोने में
अपना विस्तर लगाना पड़ा !

टीवी देखता हूँ, तो बच्चे रिमोट छीन लेते हैं ।
कार्टून चैनल देख कर, आस्था लगा देते हैं ।
हम आस्था लायक हैं, ये कैसे जान लेते हैं ?
एक पैर कब्र में गया, ये कैसे मान लेते हैं ?
योगा करता हूँ तो कहते हैं, मरने से ऐसे डरते हैं ।
जैसे दुनियाँ में कभी, किसी के बाप नहीं मरते हैं ।

एक दिन नाती पूछ रहा था, दादाजी,
आज पेपर में, कितने एड आये हैं ?
मेरी अनभिज्ञता पर बोला --
मम्मी तो कहती है, आप पेपर चाट जाते हैं ।
इतना भी नहीं मालूम, तो सिर क्यों खपाते हैं ?

रिटायर्ड आदमी को,
सब फालतू समझते हैं ।
वे छोटी छोटी बातों में,
बार बार बमकते हैं ।
बात करो तो, अपनी ही हाँकते हैं ।
मैंने ये किया, वो किया, यही फांकते हैं ।

न सुनना हो मत सुनो, मगर बातें तो कहने दो ।
बोलने की आदत है, धीरे धीरे छूटेगी ।
स्वयं को सब कुछ, समझने की धारणा,
धीरे धीरे टूटेगी ।

मैं कहता हूँ अरे भाई, अभी रिटायर हुआ हूँ,
कुछ पेंशन तो खाने दो ।
बेटा कहता है - मूलधन तो ले ही लिया,
अब ब्याज को जाने दो ।
कुछ बोलने पर, क्यों घर वाले झल्लते हैं ?
चाहता हूँ कहूँ, घर का मुखिया न रहा, न सही,
एक सम्मानित सदस्य, तो बने रहने दो !

सुमित्रा अधिकारी
सहायक नियंत्रक क्रय
कर्मचारी सं. 2775
क्रय विभाग

जीवन का आनन्द लो

शुक्र कर रब का, तू अपने घर पर है,
पूछ उस से जो अटका सफर में है ।
तेरे घर में राशन है, तू उसका सोच जो
दो वक्त की रोटी के फिक्र में है ।
तुम्हें किस बात की जल्दी है,
अब तो सारी कायनात ही सब्र में है !

अभी भी किसी भ्रम में मत रह
इन्सानों की नहीं सुनती आज कल
कुदरत अपने सुर में है ।
मन भर कर जी, मन में भर कर नहीं ।

जीवन ऐसा हो जो संबंधों की कदर करे,
और संबंध ऐसे हो जो याद करने को मजबुर कर दे ।
दुनिया के रैन बसेरे में पता नहीं कितने दिन रहना है,
जीत लो सबके दिलों को बस यही जीवन का गहना है !

छोड़िए शिकायत, शुक्रिया अदा कीजिये
जितना है पास, पहले उसका मजा लीजिए ।
जिधर से गुजरिये मीठी सी हलचल मचा दीजिये,
भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने बहुत बड़ी बात कही है,
जीवन के उद्धार के लिए केवल मित्र,
प्रेम और परिवार चाहिए ।

उम्र का हर एक दौर मजेदार है, उसका मजा लीजिए,
अच्छे कर्म कीजिए, अच्छे सम्बन्ध रखिए ।
किसी का भला नहीं तो बुरा मत सोचिए,
निस्वार्थ भाव से अच्छे कर्म करिए ।

यह मेरा वह तेरा माया मोह छोड़िए,
अकेला आया है अकेला ही जाना है ।
क्योंकि इस धरा का इस धरा पर,
सब कुछ धरा रह जायेगा ।
साथ कुछ भी नहीं जायेगा यही सत्य है,
क्योंकि रिटर्न टिकट तो कन्फर्म है ।

सुमित्रा अधिकारी
सहायक नियंत्रक क्रय
कर्मचारी सं. 2775
क्रय विभाग

बेटियों के नाम

बेटी हूँ मैं, भूल नहीं जो पछताते हो
कोख में माँ के आते ही, सब क्यों डर जाते हो ?
मेरे आने की सूचना, क्यों माँ का दिल दहलाए ?
पिता विचलित होकर क्यो सोचे, कैसे बेटी का बोझ उठाए
रोते हैं क्यों दादा-दादी क्या मै हूँ कोई बरबादी ?
तुम सब से मैं पूछती हूँ क्यो नहीं मुझे जीने की आजादी ?
मै हूँ डाली फूलों की, आँगन महकाती हूँ ।
बेटी हूँ मै, भूल नहीं हूँ ....
मै हूँ पवन प्रेम की पूजा, मै गरिमा हूँ अपने घर की
माता-पिता के स्नेह लेप से महकूँगी चन्दन प्रतिमा सी
पढ़-लिखकर नूतन समाज में हर दायित्व निभा रही हूँ
अपने सामर्थ्य और विवेक से, जय गाथा लिख जाऊँगी ।
मै कितनी सक्षम हूँ यह कर दिखलाऊँगी ।
आज बेटी देश की सीमा सजाने बढ़ गई ।
माटी का चन्दन लगाकर ले तिरंगा बढ़ गई
काँधे पर बन्दूक रखकर घर की चौखट लांघकर
भारती के भाल पर केसर चढ़ाने बढ़ गयी
बेटी हूँ मै, भूल नहीं हूँ ....
सरिता सी निर्मलता मुझमे और धरती की स्थिरता ।
माँ जैसी है ममता मुझमें, अटल शिला की सहनशीलता ।
वक्त पड़े तो इंदिरा गाँधी, किरण बेदी मैं बन सकती हूँ ।
राष्ट्र स्वाभिमान की रक्षा हेतु रानी झाँसी बन सकती हूँ ।
दुश्मनों को मारने को खुद की भाला बन गई
साज और श्रृंगार तजकर, गहने गुड़िया छोड़कर
अब वतन के आन खातिर बनके बरछी तन गई
प्रेम की चुनर आँचल तीन रंग में रंग गई
छोड़कर सुकूवारपन दूर मौसम में कठिन,
झोली में आशीष भर के हौसला संग चल पड़ी
बेटी हूँ मैं भूल नहीं हूँ ....

संयुक्ता कुमारी
कर्मचारी संख्या - 7406
विभाग - मेडिकल
यूसील, तुरामडीह

प्रेरणादायक विचार

1. लाइफ में खुश रहना है तो कभी भी किसी से ज्यादा उम्मीद न रखें ।
2. हम खुद को कमज़ोर करते हैं जब दूसरों से दुखी होते हैं ।
3. अगर किसी चीज़ को पाने की चाह है तो कतई मुश्किल नहीं है उस पर फोकस करें ।
4. अपने आकांक्षा को लक्ष्य बनायें और उसे पाने के लिए जी-जान लगा दें ।
5. कोई भी काम दूसरों को दिखाने के लिए न करें बल्कि अपनी संतुष्टी के लिए करें ।
6. यह स्वाभाविक है कि किसी भी काम को करने में कई बार असफलता मिलती है लेकिन प्रयास ज़ारी रखें ।
7. कड़ी मेहनत और फोकस से आप अपना मुकाम हासिल कर सकते हैं ।
8. किताबी ज्ञान से प्रैक्टिकल ज्ञान बहुत जरूरी होता है ।
9. गलतियाँ होना हमारी ज़िंदगी का एक भाग है जिससे हम बहुत कुछ सीखते हैं ।
10. जब भी करियर को लेकर टेंशन होता है तो यह सोचिए कि अपने पास कम से कम सैलरी तो है लेकिन कई लोगों के पास यह भी नहीं होता ।
11. अगर आप किसी के साथ अच्छा करते हो तो आपको अच्छा नतीजा जरूर मिलता है ।
12. जिंदगी में एक हार के बाद तुरंत नहीं उठोगे तो कभी जीत नहीं पाओगे ।
13. न ज्यादा न कम बस उतना ही बोले जितने में आपका काम हो रहा है ।
14. हमें हर रोज़ अपनी जिंदगी से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है ।
15. अगर एक भी व्यक्ति कोई काम कर सकता है तो आप भी उस काम को कर सकते हैं ।
16. आप जो भी काम करते हैं उसकी तुलना किसी और से न करें ।
17. जो लोग आपसे जलते हैं वही लोग पीठ पीछे आपको ग्रेट मानते हैं ।

सहायक हिन्दी अधिकारी

पैसा की मुँह जुबानी

आजकल दुनिया पैसा के पीछे भागती है । पैसा अपने बारे में क्या कहता है जरा सुनिएगा - मुझे मरने के बाद आप ऊपर नहीं ले जा सकते हो लेकिन मैं आपको जीते जी बहुत ऊपर ले जा सकता हूँ । मैं पैसा हूँ मुझे इतना पसंद करें जितना नमक खाने में जरूरी है, लेकिन ज्यादा नमक खाने का जिन्दगी का स्वाद बिगाड़ देता है । मैं पैसा हूँ इतिहास गवाह है उनके (राजाओं) के पास बेशुमार था और उनके पास मैं था लेकिन जब वे इस दुनिया से गये तो उनके पास और मेरे पास रोने वाला कोई नहीं था । मैं कुछ भी नहीं हूँ लेकिन आपको यह याद दिलाते रहता हूँ कि मैं पैसा हूँ । मैं रोज नए-नए रिश्ते बनाता हूँ लेकिन पुराने रिश्ते तोड़ भी देता हूँ । मैं पैसा हूँ । मुझे अगर पूजा में दिया जाता है तो चढ़ावा कहते हैं । अगर मस्जिद में दिया जाए तो चंदा, अगर स्कूल में दिया जाए तो फीस, अगर मजदूर को दिया जाए तो मजदूरी, अगर सेवा निवृति के बाद दिया जाए तो पेंशन, अगर सरकार को दिया जाए तो टैक्स, अगर गुंडा को दिया जाए तो फिरौती । मैं आज जितना अच्छा हूँ उतना बुरा भी हूँ । हलाल के रास्ते आता हूँ तो सुकून मिलता है और हराम के रास्ते आता हूँ तो परेशानी बढ़ जाती है । तनाव और बीमारी भी लेकर आता हूँ जैसे कि उच्च रक्तचाप, मधुमेह । मैंने ऐसे अमीर भी देखे हैं, जिनके पास मेरे सिवा कुछ भी नहीं होता है । और जिनके पास नहीं होता हूँ उनको भूख से बिलखते हुए देखा हूँ । मैं पैसा हूँ । सही रास्ते कमाओ तो तोहफा, गलत रास्ते से कमाओ तो सजा । मुझे सोच समझ के हाथ लगाना क्योंकि मैं पैसा हूँ ।

डॉ. (श्रीमती) बबीता शॉ
मुख्य प्रबंधक (चि. से)
तुरामडीह अस्पताल

''हिन्दी की उपयोगिता''

14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी भाषा को राजभाषा का मान्यता प्राप्त हुआ। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक इसका उल्लेख किया गया है। भारत में लगभग 70 करोड़ नागरिक इस भाषा को समझते और बोलते हैं। उस के युग में सबसे सरल भाषा हिन्दी को मानी जाती है। भारत के अलावा विदेशों में भी इस भाषा का प्रचलन है। आधुनिक युग की सबसे सरल और सहज भाषा हिन्दी को मानी जाती है। हिन्दी राजभाषा के रूप में जबसे उभर कर आ गई है तबसे नागरिकों का आपसी समनजस्वय अधिक हो गया है यानि लोग एक-दूसरे से साथ ज्यादा घुलने-मिलने लगे हैं।

आज के युग में राजभाषा हिन्दी का स्वरूप :

आज के युग में राजभाषा हिन्दी का स्तर काफी नीचे की ओर जा रहा है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण हम खुद हैं। आज हिन्दी को छोड़कर अंग्रज़ी भाषा पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। हिन्दी बोलने वाले लोग अपने आप से नफरत करते हैं क्योंकि उसे अंग्रेज़ी बोलनी नहीं आती। हिन्दी बोलने वाले सोचते हैं कि अंग्रेज़ी भाषा अति लाभदायक है परंतु ये तथ्य गलत है क्योंकि हिन्दी भाषा की अपनी पहचान अलग है यह अपने आप में भाषाओं का जनक है। इसीलिए जो भी सोचते हैं कि अंग्रेज़ी भाषा ज्यादा महत्वपूर्ण है ये कथन गलत है। आज के युग में हिन्दी राजभाषा का पिछड़ापन के महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं :

क) अशिक्षा :

अशिक्षा एक महत्वपूर्ण कारण है हिन्दी राज भाषा का पिछड़ापन का इसलिए शिक्षित युवक और युवतियों और जो भी पढ़े लिखे है उसे इस स्तर को ऊँचा करना है। आज के युग में शिक्षित को आगे आ के हिन्दी राजभाषा की स्तर को बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए।

ख) संचार का माध्यम :

आज के युग में इसका अहम भूमिका है। संचार के माध्यम से आज सभी लोग जुड़े हुए हैं। इसलिए इसका विकास और विस्तार हिन्दी राजभाषा को बढ़ावा देने काफी महत्वपूर्ण है। संचार का माध्यम अति महत्वपूर्ण है हिन्दी राजभाषा के लिए। हिन्दी राजभाषा को बढ़ावा और विकसित करने के लिए संचार के माध्यम से अधिक से अधिक सुझाव दिया जाना चाहिए। संचार का माध्यम सबसे महत्वपूर्ण कारक है हिन्दी राजभाषा का पिछड़ापन का।

ग) विज्ञापन :

विज्ञापनों की अपनी भूमिका होती है। अधिक से अधिक विज्ञापन अंग्रेज़ी में प्रकाशित करने से दूसरे भाषा का स्तर विलुप्त होता है। राजभाषा का पिछड़ापन का यह एक महत्वपूर्ण कारण है।

घ) शिक्षा संस्थान (उच्च) :

उच्च शिक्षा संस्थान में अंग्रेज़ी को नींव भाषा के रूप में उपयोग किया जाता है । इस कारण राजभाषा का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है । अधिक से अधिक शिक्षा संस्थान में देखा गया है कि अंग्रेज़ी मूल भाषा के रूप में उपयोग किया जाता है ।

ङ) रोजगार के अवसर :

आज कल हिन्दी भाषा की मान्यता विलुप्त हो गई है । रोजगार के सभी अवसर पर अंग्रेज़ी भाषा की मान्यता ज्यादा देखी गई है । हर क्षेत्र में अंग्रेज़ी बोलने वाले बच्चों का ज्यादा से ज्यादा अवसर प्राप्त होते हैं । रोजगार के अवसर पर भी अंग्रेज़ी भाषा का ज्यादा प्रकोप है ।

च) रूचि :

आजकल के युग में बच्चों की रूचि हिन्दी से अंग्रेज़ी भाषा पर ज्यादा है । इस कारण भी राजभाषा हिन्दी का पिछड़ापन है ।

उपरोक्त कारण के अलावा बहुत से कारण हैं जो हिन्दी राजभाषा के पिछड़ापन का कारण है । इसलिए ये सभी कारणों को समन्वय कर हिन्दी राजभाषा को आगे बढ़ाना है ताकि हम सब एक सूत्र में बंधे रहे । यह हमारी राजभाषा है और राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए हम सब को निम्न कदम उठाने होंगे । जो निम्नलिखित है :

क) संचार के माध्यम से लोगों को हिन्दी के प्रति जागरूक करना ताकि लोग हिन्दी राजभाषा के बारे में समझ सकें ।

ख) रोजगार के अवसर में हिन्दी माध्यम के छात्र को भी बराबर का दर्जा दिया जाए । अंग्रेज़ी बोलने वालों और हिन्दी बोलने वालों में भेदभाव नहीं होना चाहिए ।

ग) विज्ञापनों में भी हिन्दी राजभाषा की उपयोगिता पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिए ।

घ) शिक्षा का माध्यम में हिन्दी राजभाषा की उपयोगिता और जरूरत को विद्यार्थीयों को बतलाना होगा ताकि आने वाले युग में हम हिन्दी राजभाषा को बचा सके ।

ङ) रूचि के माध्यम से भी हम लोगों को जागरूक कर सकते हैं ।

च) नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को जागरूक करना ।

छ) अधिक से अधिक क्रियाकलाप किया जाए ताकि लोगों तक इसका महत्व को पहुँचाया जा सके ।

उपरोक्त कारणों के अलावा और भी बहुत से कारण हैं जिससे हमें हिन्दी को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी । अन्य कारणों को ले कर हम हिन्दी राजभाषा का और आगे बढ़ाने में अग्रसर है ताकि इसका अस्तित्व को सब जानें और समझें ।

हिन्दी भाषा की उपयोगिता :

आज के युग में हिन्दी भाषा की उपयोगिता हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है । हिन्दी भाषा के माध्यम से गर्व लगता है कि हम भारतीय है । हिन्दी के कारण हमारी पहचान हो कि हम भारतीय हैं । केवल 14 सितम्बर को ही हिन्दी के बारे न समझाया जाए । जीवन की शुरुआत से अन्तिम तक इस पर ज़ोर दिया जाना चाहिए । हिन्दी भाषा की उपयोगिता हमारे दैनिक जीवन में काफी महत्वपूर्ण है । इसको सरल बनाने के लिए नीचे एक चित्र के माध्यम से समझाना चाहता हूँ :

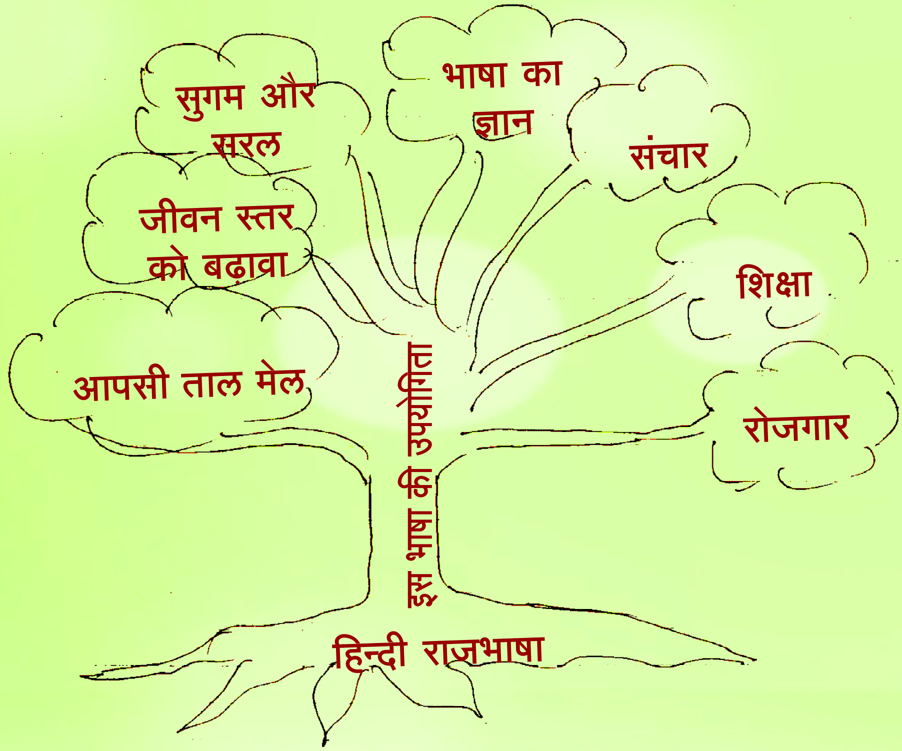

इस चित्र के माध्यम से हिन्दी राजभाषा की उपयोगिता को बताया गया है । हम अपने जीवन में हिन्दी राजभाषा को अपना कर इसके विकास को बढ़ावा दे सकते हैं ।

हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा मानी जाती है जिसके कारण हम अपनी कोई भी समस्या को दूसरे के साथ और दूसरों को अपनी बात इस भाषा के माध्यम से हम बता सकते हैं । हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्ज़ा मिलने के बाद इस क्षेत्र में काफी बढ़ावा हुआ है । हिन्दी के कारण भारत की संस्कृति की एक पहचान है । यह पहचान पूरे विश्व में जानी जाती है । यह पहचान पूरे विश्व में जानी जाती है । माननीय प्रधानमंत्री जी का काफी धन्यवाद है की उन्होंने हिन्दी राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया । हर सरकारी दफ्तरों पर उन्होंने काफी ज़ोर दिया कि अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाए । हर सरकारी विभागों में इसलिए सभी नामपत्र और सूचना हिन्दी से लिखे जाते हैं ताकि लोग उसे पढ़ कर समझ सकें । काफी सराहणीय है यह कि आज देश में काफी अधिक बढ़ावा मिल रहा है हिन्दी राजभाषा को ।

निष्कर्ष :

हिन्दी राजभाषा की उपयोगिता से तात्पर्य यह है कि हिन्दी को सब समझे और बोले । हिन्दी राजभाषा अपने आप में एक जनक है । इसको बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाए जाए और हम सब को इसकी महत्ता को बताना चाहिए । अन्त में हिन्दी राजभाषा को बढ़ावा सभी के प्रयास से होगा इसीलिए अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाए ।

हिन्दी देश की बिन्दी !!

हिन्दी राजभाषा देश की पहचान !!

जय हिन्दी, जय भारत ।

नाम : तापस कुमार माझी

कर्मचारी संख्या : 4629

बिखरते रिश्ते बिखरता परिवार

'परिवार' शब्द का उच्चारण करते ही आँखों के सामने एक ऐसा दृश्य उभर कर आता है, जहाँ माता-पिता, बच्चों के साथ दादा-दादी का एक भरा पूरा संसार होता है। प्राचीन युग में बड़े-बड़े परिवार हुआ करते थे। राजा-महाराजा, सभी अपने परिवार, अपने वंश के आधार पर जाने और पहचाने जाते थे। जितना बड़ा वंश, उतना ही उच्च घराना माना जाता था। उस समय राजाओं के बीच घराने को लेकर, वंश को आगे बढ़ाने को लेकर, युद्ध भी हुआ करता था। राज विस्तार की चाह, परिवार को बढ़ाने की चाह - हर एक राजा के दिल में होती थी।

परन्तु इसके ठीक विपरीत, आज के परिवेश में लोग अपने परिवार को सीमित या छोटा रखना ज्यादा पसंद करते हैं। या यूँ कहें कि आज के समाज का नारा है - छोटा परिवार, सुखी परिवार। कुछ वर्ष पहले नारा था - हम दो, हमारे दो, और आज का नारा है - हम दो, हमारे एक। सच्चाई यह है कि आज आर्थिक रूप से कई लोग सक्षम होते हुए भी छोटे परिवार को अपनाने में सहज महसूस करते हैं। शायद वे अपनी खुशी, अपने भविष्य को लेकर इतने व्यस्त हैं कि एक बच्चे तक को पालने का उनके पास पर्याप्त समय नहीं है।

न प्यार है, न दुलार है, बस नाम का परिवार है
नहीं फिक्र एक-दूसरे की, हर रिश्ता बीमार है

अब प्रश्न यह उठता है कि परिवार और रिश्ते - दोनों किस प्रकार एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। परिवार बनाना, परिवार सुचारू रूप से चलाना - इतना आसान कार्य नहीं है। मकान बनाना, मकान खरीद कर साज़ो-सामान से सजाना आसान है परन्तु एक परिवार सुखी बनता है, समृद्ध बनता है - रिश्तों की रेशम डोर से। ऐसा देखा गया है - जिस परिवार में बड़े-बुजुर्गों का निवास होता है, वहाँ नैतिक संस्कार और परंपराओं का सही अनुपालन होता है। एक-दूसरे का आदर करना, आपस में स्नेह-भाव रखना - यह सब कुछ एक अच्छे परिवार में ही मिल पाना संभव है।

कहा भी गया है -

संस्कार मिले जिस द्वार
वहीं समृद्ध परिवार
रिश्तों का हो अटूट बंधन
सुखी हो जन-जीवन

हमने देखा है, जिस परिवार में बुजुर्गों की बातों का अनुपालन होता है, वहाँ अनुशासन होता है। वहाँ बच्चे भी बड़े होकर संस्कारी बनते हैं। सत्य तो यह है कि उच्च शिक्षा बच्चों को पद से बड़ा जरूर बनाती है परन्तु अच्छे संस्कार उसी बच्चे को एक आदर्श पुरूष बना कर समाज में स्थापित करता है। इतिहास के पन्नों को पलटने से कई उदाहरण सामने आ जाएँगे। परिवार में जब लोगों की संख्या ज्यादा होती है, दुःख-सुख बाँट कर जिंदगी आगे बढ़ती है। सभी लोग एक-दूसरे का ख्याल रख पाते हैं। यदि कोई अस्वस्थ होता है, उसकी सहायता के लिए चार लोग हमेशा तत्पर रहते हैं। घर में पूजा या किसी त्योहार का अवसर हो तो फिर वातावरण उत्सव-सा हो जाता है। यही है संयुक्त परिवार से लाभ जो एक अलग-थलग पड़े छोटे परिवार में दिखाई नहीं देता।

हाँ, छोटे परिवार में सुख-साधनों की कमी नहीं होती पर वहाँ संस्कार और परंपराओं की सीख देने वाले कोई नहीं होते । सभी लोग आज़ादी से अपनी जिन्दगी जी रहे होते हैं परन्तु खुश नहीं होते । बच्चे को पढ़ाकर आज हम डॉक्टर या इंजीनियर जरूर बना रहे हैं परन्तु यदि वह पारिवारिक संस्कार को न सीख पाए, मानवीय मूल्यों का आदर न कर पाए तो इसमें अचम्भित न हों । कारण, इसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं । बचपन से हमने अपने बच्चे को हर वह सुख देने का प्रयास किया जिससे हम अपने बचपन में वंचित रहे थे । हमने अपने बच्चे को कभी किसी तरह की तकलीफ झेलने की शिक्षा ही नहीं दी । कभी सिखाया ही नहीं कि जीवन में बड़े-बुजुर्गों का सदा आदर करना चाहिए । कभी बच्चों के साथ अपनी तकलीफ़, अपने अनुभवों का जिक्र ही नहीं किया । बस बच्चों को किताबी ज्ञान मिला, अच्छा मकाम मिला जिसे हासिल कर सारे रिश्ते भुलाकर उसने विदेश का रुख कर लिया । ऐसे बच्चों के लिए सभी रिश्ते फेसबुक, व्हाट्सऐप पर संदेश भेजना भर रह जाता है । उसे आप इतना व्यस्त कर देते हैं कि माँ-बाप से नाता टूट ही जाता है । इस तरह जो रिश्ता बचपन में सुखद था, वह बड़ा होकर केवल नाम मात्र का रह जाता है । परिवार में बस यादें ही रह जाती हैं, रिश्ते बिखर जाते हैं ।

रिश्तों के बनते-बिखरते परिवेश में,
बस नाम मात्र का रह गया परिवार
मानवीय मूल्यों का नहीं है आदर
नहीं प्रेम की भावना, खो गई संस्कार ।

अब समय आ गया है, हम वापस अपने संस्कार और मानवीय मूल्यों का महत्त्व समझें । परिवार के विशाल वृक्ष में रिश्तों की शाखाओं पर प्रेम के पुष्प खिले, परम्पराओं के फल लगे तभी परिवार रूपी वृक्ष हरा-भरा रह पाएगा । प्रथम दिन से ही अपने बच्चों को रिश्तों के महत्त्व बतलाएँ । उन्हें संस्कारों की परिभाषा समझाएँ । मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाएँ । बच्चों को हमेशा अपने साथ जोड़ कर रखें ताकि घर से बाहर जाकर भी वे रिश्तों की कद्र करें । रिश्तों का पलना-बढ़ना, सब हमारे बच्चों के साथ घनिष्ठ संबंधों पर निर्भर करता है । बच्चा जब बड़ा हो जाए, अभिभावक से मित्र बनकर उसका मार्ग निर्देशन करें । ऐसा करने से ही हम आज के परिवेश में रिश्तों को बिखरने से बचा पाएंगे । माना यह एक गंभीर चुनौती है, परन्तु प्रयास करने से कुछ भी हासिल करना असंभव नहीं ।

आओ, प्रेम-पूजा की करें आरती
संस्कारों की सदा जलाएं ज्योति
रिश्तों की फूलों से सजाए संसार
सुख-समृद्धि से बने परिवार ।

द्वारा - काशीनाथ चौधरी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कर्मचारी संख्या - 15293
विभाग - प्रशासन

है भारत माँ के माथे पर, सुशोभित जैसे एक बिन्दी
हिन्दुस्तान का गौरव है सदा, राजभाषा अपनी हिन्दी
कहीं खो न जाए ये हिन्दी, इस बात का ध्यान रखना
दिवस या हफ्ते भर नहीं, सदा ही इसका मान रखना
है भारत माँ के माथे पर ......

विकास का द्वार

हिन्दुस्तान की मिट्टी में जन्म लिया, अम्बेडकर महान
आज़ाद हुआ जब देश अपना, रचा सर्वश्रेष्ठ संविधान
प्रगति के पथ पर अग्रसर, था भारत अपना
विश्व में मान बढ़े भारत का, था यही सपना

हो रहा था जब भारत में, विकास की तैयारी
ऐसे में पूरे विश्व में फैली, कोरोना महामारी
जब तक हम समझ पाते, संभल पाते, हो चुका सा संक्रमण
हर राज्य, हर शहर, हर गाँव में, हुआ कोरोना का आक्रमण

लॉकडाउन का जब हुआ एलान, हुए जनमानस परेशान
पैदल ही घर लौटे मजदूर, छोड़ शहर अनजान
रास्ते की मुश्किलों में आ गए, कई निःस्वार्थ साथी
भूखों तक भोजन पहुँचाया, जलाया अंधेरे में बाती

अनलॉक हुआ आज देश मगर, बढ़ रही है बेरोज़गारी
अब भी भूखे-लाचार कई, विस्तार लेती महामारी
स्कूल-कॉलेज सब बन्द हैं, जाने क्या हो भविष्य अपना
शायद हिम्मत और संयम से, पूरा हो फिर सपना

विपदा की इस कठिन घड़ी में, स्वास्थ्यकर्मियों को नमन है
विधि-व्यवस्था का रखा है ध्यान, पुलिसकर्मियों को नमन है
रखकर सामाजिक दूरी, निर्देशों का पालन करें
साफ-सफाई का रखकर ध्यान, मास्क भी पहना करें

हो रहा अनुसंधान यहाँ, अब वैक्सीन भी आएगा
एकजुटता और सहयोग से एक दिन, कोरोना भी जाएगा
आपदा को अवसर में बदल, भारत आत्मनिर्भर बनेगा
विकास का द्वार फिर खुलेगा, तिरंगा फिर लहराएगा ।

काशीनाथ चौधरी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
क. स. 15293

इस महामारी का क्या कोई अंत है ?

मुश्किल में आज पूरा देश है
घर में रहने का संदेश है
प्रकृति जब तक यहाँ जीवित है
मानव तब तक संघर्षरत है
इस महामारी का क्या कोई अंत है ?

यदि संक्रमण को रोकना है
वाइरस चक्र को तोड़ना है
भावनात्मक एकजुटता दिखलाना है
सतत प्रयास से ही सही फलंत है
इस महामारी का क्या कोई अंत है ?

अफवाहों को छोड़कर, सरकारी
निर्देशों का करना है सदा अनुपालन
कोरोना से लड़ने का लिया है वचन
समस्या यह सभी की, नहीं व्यक्तिगत है
इस महामारी का क्या कोई अंत है ?

आज मानवीय मूल्यों की परीक्षा है
साथ हमारे धैर्य और साहस की शिक्षा है
हमारा सामूहिक प्रयास व्यर्थ न जाएगा
स्मरण रहे, साथ हमारे एक महंत है
हाँ, हाँ, इस महामारी का भी अंत है ।

द्वारा - काशीनाथ चौधरी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
क. स. 15293

सब कुछ बदल गया

सब कुछ बदल गया
समय का बहता सागर
सूखे रेत की तरह
मेरे हाथों से फिसल गया ।
सब कुछ बदल गया !

बचपन के वो खेल खिलौने
यौवन के वो सपने सलोने
यथार्थ के दावानत के सामने
टूटे शीशे की तरह पिघल गया ।
सब कुछ बदल गया !

मेरा मन था चंचल
भावनाओं का ज्वार
उठता था इस में हर पल
चाहता था नभ को छू लूँ उड़कर ।
मन की सारी आशाएं, सारा सम्बल
तपती धूप में बर्फ की तरह पिघल गया ।
सब कुछ बदल गया !

वो दिन करता हूँ याद,
जब भविष्य से करता था संवाद ।
सोचता था जब, कर्तव्यनिष्ठा से
पूरा करूँगा हर कार्य,
गलत का करूँगा हमेशा प्रतिवाद ।

कालक्रम के कुचक्र में फँसकर,
दुष्ट समाज के दलदल में धस गया ।
सब कुछ बदल गया !

क्या बची है कोई आस ?
दिल टूटता है हर पल
फिर भी कहता है खुद से न हो निराश !
उठा के अपना सम्बल,
समेट कर अपनी काया का सारा बल
फिर से बुन सपना नया
पी ले विषधर समाज का सारा हलाहल !
दिखा दे इन अधर्मियों को अपना बाहुबल ।
मचा दे चहुंओर ऐसा कोलाहल ।
सब कर उठे चीत्कार,
ये आग का दरिया कहाँ से निकल गया ?

अट्हास करेगा तेरा अंतर्मन दानवों की तरह,
तू रहेगा अप्रतिम-अपरिवर्तित
और,
और बाकि सब कहेंगे,
अरे अरे !
सब कुछ बदल गया !

सौरभ कुमार सिंह
अपर अधीक्षक
कर्मचारी संख्या - 7514
नियंत्रण, अनुसन्धान एवं विकास विभाग
यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, तुरामडीह

कोरोना और पर्यावरण

पिछले कुछ महीनों से नए कोरोना वायरस ने दुनिया में आतंक मचाया है । चीन के वुहान शहर से शुरू होकर पूरी दुनिया को अपने चपेटे में ले लिया है । लाखों लोग इस वायरस के शिकार हो चुके हैं । यह अब महामारी का रूप ले चुकी है । इसकी अभी तक कोई दवा भी नहीं बन पाई है । विश्व के विभिन्न देश इस महामारी से बचने के लिए विभिन्न उपाय लगा रहे हैं । हमारे देश को इस महामारी से बचाने के लिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संपूर्ण देश में लॉकडाउन का आवाहन किया जिसे सभी देशवासियों का समर्थन प्राप्त हुआ । सभी लोग घरों में कैद हो गए । सड़क-चौराहें, स्कूल-कॉलेज, ऑफिस-फैक्टरियाँ सभी वीरान हो गए । बाज़ारें बंद हो गई, तीर्थस्थान सूने हो गए । चारों तरफ पसर गया सन्नाटा !

कोरोना वायरस के कारण मानव जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हुआ है, लेकिन यह भी सच है कि मरण के साथ सृजन भी सृष्टि का ही रूप है । एक तरफ जनजीवन अस्त-व्यस्त तो दूसरी तरफ प्रकृति में कुछ अनोखे परिवर्तन भी देखने को मिल रहे हैं । एक ओर कोरोना ने जीवन को आतंकित किया तो दूसरी तरफ प्रकृति को अचंभित किया । हाल ही में उत्तराखंड पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने देवप्रयाग से लेकर हरिद्वार में गंगा जल की गुणवत्ता के नमूनों की जांच की तो पता चला कि पहली बार हरिद्वार में गंगा के जल की गुणवत्ता पीने योग्य 'ए' श्रेणी की हो गई है जो पहले सिर्फ नहाने योग्य 'बी' श्रेणी की थी । गंगा का जल एकदम साफ नीला दिखाई दे रहा है । नदी के धरातल के कंकड़ और जलीय जीव भी साफ नजर आ रहे हैं । वैज्ञानिकों का मानना है कि गंगा के साफ जल का कारण उसमें घुले डिसॉल्व सॉलिड की मात्रा में कमी है । लॉकडाउन के कारण सभी होटल और धर्मशाला बंद हो गए जिससे उसके सीवर और अन्य प्रदूषकों में कमी हुई और पानी की गुणवत्ता में असर दिखाई पड़ा । तीर्थयात्रियों की अवाजाही बंद होने के कारण गंगा घाटों की साफ-सफाई बढ़ी और उसकी रमणीकता लौट आई । गंगा का जल स्वच्छ और निर्मल दिख रहा है । जिस स्वच्छता और निर्मलता के लिए सरकारें करोड़ों रुपए खर्च करके परिणाम नहीं ला सकी वह परिणाम एक वायरस के कारण लॉकडाउन से मिल गया ।

जल प्रदूषण के साथ-साथ वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण में भी फर्क नजर आया है । फैक्टरियों के बंद होने एवं गाड़ियों के परिचालन में बंदी के कारण पर्यावरणीय तौर पर वायु एवं ध्वनि प्रदूषण में कमी आई है । हवा भी शुद्ध हो गई है । उत्तराखंड के स्पेस अप्लिकेशन सेंटर के निदेशक डॉ. एम.पी.एस. बिष्ट के अनुसार हिमालय की धवल चोटियां साफ दिखने लगी हैं । दिल्ली का एनसीआर क्षेत्र सबसे प्रदूषित माना जाता था । दिन-भर धूल की एक चादर ऐसी होती थी मानो धुंध छाया हो परन्तु अब आसमान साफ नजर आ रहा है । सबकुछ बंद होने के कारण कार्बन-उत्सर्जन में कमी आई है । केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्ययन के अनुसार ध्वनि प्रदूषण में 5 से 10 डीबी की कमी आई है । दिल्ली के भीड़-भाड़ वाले इलाके में जहां दिन के समय ध्वनि प्रदूषण का सामान्य स्तर 55 और रात के समय 45 डीबी होता था वहां पर्यावरण को बहुत लाभ हुआ है ।

कोरोना वायरस से मानव जन-जीवन को बहुत क्षति पहुँची है इसे भुलाना कठिन है, परन्तु पर्यावरण में जो बदलाव आए हैं उन्हें अनदेखा नहीं कर सकते । पूरी दुनिया और हमारे देश में जिस पर्यावरण और परिस्थिति की तंत्र की रक्षा के लिए अनेक बड़ी-बड़ी संगोष्ठियाँ और कार्य-योजनाएँ बनी एवं अरबों रुपए खर्च हुए परन्तु नतीजा कुछ खास नहीं निकला वहीं यह काम एक वायरस के कारण हुआ ।

श्रीमती शकुन्तला समद
कर्मचारी संख्या - 25153
पदनाम - एलडीसी/टाइपिस्ट
विभाग - नियंत्रण, अनुसंधान एवं विकास विभाग
यूरेनियम कॉरपोरेशन एण्ड इंडिया लिमिटेड, तुरामडीह

कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य

कोरोना अर्थात् कोविड-19 ने पूरे विश्व में महामारी का रूप ले लिया है। कोरोना का पहला मरीज चीन के वुहान शहर में पाया गया था। आज यह समस्त विश्व में फैल चुका है। चाहे विकसित देश हो या अविकसित देश हो या विकासशील देश हो इसके मार से कोई भी अछूता नहीं रहा है।

कोरोना के रोकथाम के लिए डॉक्टर, पुलिस, सफाई कर्मी, सरकार सभी लोग जी जान से लगे हुए हैं। परन्तु आम जनता अर्थात् समाज इस को गंभीरता से नहीं ले रहा है। हम सब तो बेखौफ घूम रहे हैं। हमारे लिए रेस्टोरेंट में खाना, पिक्चर देखना ज्यादा जरूरी है। इसके बिना तो हम जिंदा नहीं रह सकते। काम हो या न हो हम से घर में रहा ही नहीं जाएगा। ये सब तो इसलिए हो रहा है क्योंकि हम इसकी तकलीफ से अभी तक गुजरे नहीं हैं।

आज हमारा देश कोरोना संक्रमित देशों में दूसरे नम्बर पर है। प्रतिदिन हमारे देश में करीब एक लाख लोग संक्रमित हो रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित कर दिया है।

अब हमें अर्थात् समस्त समाज को यह सोचना होगा कि हम अपने सरकार को इस महामारी को रोकने में कैसे मदद कर सकते हैं।

1. हमें अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। उसी वक्त निकलना चाहिए जब अत्यन्त आवश्यक हो। हमें पेपरलेस बैंक ट्रैन्सेक्शन पर जोर देना चाहिए और हमें आवश्यक समानों को ऑनलाइन ही खरीदना चाहिए जिससे कि हमें घर से कम से कम निकलना पड़े।
2. जब भी हम घर से बाहर निकलें हमें मास्क का उपयोग करना चाहिए।
3. हमें अपने मित्रों और सम्बन्धियों का अभिनंदन हाथ मिलाकर नहीं हाथ जोड़कर करना चाहिए।
4. हमें किसी भी सतह को छूने पर हाथ को सेनिटाइसर से सेनिटाइस करना चाहिए।
5. हमें अपने घर के बड़े-बुर्जुगों का खास ख्याल रखना चाहिए। उन्हें अच्छे खान-पान देकर उनमें रोग-प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करना चाहिए।
6. सरकार की गाइडलाइन्स का पालन करना चाहिए।
7. हमें सरकार, डॉक्टर, सफाई कर्मचारियों को हर कार्य में यथा संभव मदद करनी चाहिए। आए दिन सुनने को मिलता है लोग डॉक्टर, नर्स से उलझते हैं, उन्हें बेघर कर दिया जा रहा है, यह अत्यन्त दुख की बात है। ये वो लोग हैं जो कई दिन से अपने घर-परिवार को छोड़कर हमारी सेवा में लगे हुए हैं।
8. हम सब को आरोग्य सेतु अप्प को अपने मोबाइल में डाउनलोड करना चाहिए और उसमें सही जानकारी देनी चाहिए।
9. सरकार ने गरीब, अप्रवासी, देहाड़ी मजदूरों को खाना पहुँचाने का बेड़ा उठाया हुआ है। परन्तु ये जरूरत की चीजें उन तक पहुँच नहीं पा रही हैं। हम समाज के कुछ लोग मिलकर संगठन बना कर घर-घर में इसके वितरण में सरकार की मदद कर सकते हैं। बहुत सारे लोगों के पास राशन कार्ड, बैंक खाता नहीं है। उसे खुलवाने में हम मदद कर सकते हैं।

10. हमारे आस पड़ोस में बहुत सारे लोग हैं जिनको दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती, उन्हें हम यथा सम्भव खाने या पैसे देकर मदद कर सकते हैं ।

11. अभी कोरोना के चलते विद्यालय बन्द हैं और ऑनलाइन क्लासेस चल रहा है परन्तु गरीब बच्चों के पास मोबाइल, टेबलट आदि चीजें नहीं हैं । अगर हर परिवार भी एक गरीब बच्चे को पढ़ाये तो उनको काफी मदद हो जाएगा ।

12. हमें कोशिश करनी चाहिए की हम बड़े-बड़े मॉल जाने के बजाय गरीब किसानों और दुकानदारों से ही समान की खरीदारी करें ताकि उनकी भी जिन्दगी सुचारू रूप से चलती रहे ।

13. बहुत सारे लोग कोरोना के डर से एक जगह से दूसरी जगह पलायन कर रहे हैं । वो लोग जो दूसरे प्रदेश में काम कर रहे हैं यथा शीघ्र अपने घर पहुँचना चाहते हैं । उन लोगों को हमें समझाना चाहिए कि वो डरें नहीं और उन्हें अपने गंतव्य स्थान में पहुँचने में मदद कर सकते हैं ।

इस कोरोना के समय लोगों के दिन भर घर में रहने के कारण उन्हें अवसाद ने घेर लिया है । सब डिप्रेशन में जा रहे हैं । आत्महत्या बढ़ गई है । हमें अपने मित्रों और परिवार वालों से खुलकर बात करनी चाहिए, उनके दिल के बात को जाननी चाहिए और प्रोत्साहित करना चाहिए और यथासम्भव खुश रखने की कोशिश करनी चाहिए ।

''कोरोना के समय ये मौका मिला है हमें
कि हम गैरों के संग नहीं अपनों के संग

सबसे अहम बात ये है कि अगर हमारे आसपास कोई कोरोना से पीड़ित होता है तो हम यथासंभव उनकी मदद करें । खाना-दवाई इत्यादि पहुँचाएं क्योंकि आज अस्पताल में बेड की कमी के कारण मरीजों को घर में ही आइसोलेशन में रखा जा रहा है और कोरोना पीड़ित मरीज और उसके परिवार वाले आप संक्रमित न हो इसलिए घर से बाहर नहीं निकल रहे हैं ।

अंत में मेरा समाज से इसे कविता के माध्यम से निवेदन है कि :

कोरोना को हराना है
इसके लिए हमें घर में रहना है
हाथ नहीं मिलाना है
मास्क पहनकर ही बाहर निकलना है
आपस में प्यार बढ़ाना है
मगर दूर-दूर से प्यार बढ़ाना है
कोरोना से न डरना है
मगर इससे अपनों को बचाना है
और हम समाज के लोगों को
इसे देश से भगाना है ।

नाम : हेमलता पी. शिरोडकर
कर्मचारी संख्या : 3508
कार्मिक विभाग

प्रेम, समाज और कोरोना

प्रेम असीमित है, समाज सीमित है ।
प्रेम वह शीतल आग है, जो ईर्ष्या, क्रोध
और अहंकार को जलाकर भस्म करता है ।

समाज मानव को विकसित करता है,
उसे सुरक्षा और पहचान देता है ।
प्रेम कहता है समाज से, मुझसे तेरा अस्तित्व है
उत्पत्ति और विकास है ।।

समाज कहता है, मुझसे ही मर्यादा है,
तुम्हारा रूप और पहचान है ।
सुरक्षा और संस्कार है,
मुझसे ही दानव भी मानव बना है ।।

तभी, कोरोना का आगमन होता है,
दोनों के झगड़े सुनकर दोनो को
आईना दिखाते हुए कहता है ।

सामाजिक दूरी के फ़ायदे मैंने ही लोगों को बताए हैं,
गंगा के पानी को स्वच्छ कर, उसे पीने योग्य बनाया है ।
हवा में घुले जहर दूर मैं करता हूँ ।

अत्यधिक प्रेम के कारण भी कितनी,
बिमारियाँ फैली हैं, उसे दूर कर मैं
पारिवारिक प्रेम बढ़ाया हूँ ।

आज सभी को मैं ''अति सर्वत्र वर्जयेत्''
यही पाठ पढ़ाने आया हूँ ।

श्री रंजीत प्रसाद
लैब असिस्टेंट – 'बी'
कर्मचारी संख्या – 25245
विभाग – नियंत्रण, अनुसंधान एण्ड विकास विभाग
यूरानियम कॉरपेरेशन ऑफ इंडिया लि., तुरामडीह

कोरोना वायरस

भला किसी का कर न सको तो
बुरा किसी का मत करना
कोरोना रोक नहीं सकते
तो फिर फैलाया भी मत करना
यह सड़कें यह चौराहे हर
गली–गली सुनसान है
आज हवा में उड़ रहे पंछी और पिंजरे में बंद इंसान है !
मत घबराओ मेरे साथियों, यह उगता हिंदुस्तान है
यह बढ़ता हिंदुस्तान है यह लड़ता हिंदुस्तान है ।
कुछ ही दिनों की बात है चलो घर में रहकर
देश भक्ति निभाते हैं सब एक जुट होकर
हिंदुस्तान से कोरोना को भगाते हैं
घर के अंदर रहना बाहर मत जाओना
जीवन का साथ ना खोना बार–बार हाथ धोना
कोरोना को दूर भागाओना ।

को : कोई भी
रो : रोड पर
ना : ना निकले

भोला नाथ गोराई
क्र. सं. – 25195
पर्या. अभि. विभाग, तुरामडीह

कोरोना-एक निःशब्द घातक

एक प्रलयंकारी महामारी ने जब से दी है दस्तक ।
भयादोहन किया मानव समुदाय का यह निःशब्द घातक ।।

वूहान शहर से इस मृत्यूदूत ने मचा दिया कोलाहल ।
इस भयाल शहर से निकला एक कालकूट हलाहल ।।

इस महाविध्वंसी रोगशिशु का कैसे हुई उत्पत्ति ।
इस परिप्रेक्ष में वैज्ञानिकों में मतैक्य नहीं है सम्प्रति ।।

2019 के अन्त में चीन ने इस रक्तबीज किया प्रेषित ।
WHO के महानिदेशक किया विलम्ब से महामारी घोषित ।।

प्रथम दृष्ट्वा सभी देशों ने, इस विभीषिका को माना साधारण ।
इस हेतु, इसके विष दंश से सहस्त्रों मरे अकारण ।।

'करोना' नाम है इस आतंक का, प्रसार है बड़ा विचित्र ।
इसके महाभय से विश्व ने बदला अपना चेहरा,
चाल, चरित्र ।।

प्राथमिक स्तर पर किसी सरकार ने नहीं दिया कोई ध्यान
इस हेतु कतिपय स्वघोषित संत अपना बाँट रहे हैं ज्ञान ।।

अगर लॉक डाउन करती, सरकार फरवरी माह में कभी
तो करोना विस्फोट ऐसा न होता - ऐसा कहते हैं सभी
इस भारत भूमि में ऐसे असंख्य है - क्षणजन्मा परमज्ञानी
कटाक्ष सरकार की करके, करते अपनी ही मनमानी ।

निष्कृति हर कोई चाहता है - येन तेन प्रकारेण ।
अर्जेण्टिना, ब्राजील, अमरीका, ब्रीटेन और युक्तेन ।।

औषधि के बिना इस अदृश्य घातक से कैसे पाये पार ।
मास्क, सेनेटाइजर और सामाजिक दूरी है सब तारणहार ।।

उपासना स्थल, शिक्षण संस्थान अस्त व्यस्त इसके कारण ।
अधुना चिकित्सक देवदूत बन हैं सेवाधर्म में मगन ।।

पुलिस, सफाई कर्मी और स्वास्थ्य कर्मी अब हैं ये अवतार ।
करोना प्रहेलिका जलधि में ये ''त्राण जहाज'' के पतवार ।।

परमेश्वर जाने कब मुक्ति मिले, कब हँसे जग सारा ।
नवजीवन के नव प्रभात में कब फैले उजियारा ।।

इस कारूण्य के महानदी में मानवीय अनुभूति निःशब्द ।
माँ धरित्री के इस विषाक्त परिवेश में सब स्तब्ध हो गये शब्द ।।

मनोरंजन भकत
केन्द्रीय भण्डार, जादुगोड़ा

एक ज्वलन्त प्रश्न

दुर्योधन की हठधर्मिता निर्मित युद्धपृष्ठभूमि निर्माण ।
राक्षसी कुरूक्षेत्र का आहार्य, था मुझ अभागन का प्राण
मुझ सर्वहारा को अनुभूतिहीन रक्तरंजित कुरूक्षेत्र से ।
धर्मस्थापनोपरान्त मेरी क्या प्राप्ति इस परिप्रेक्ष से ?
वनवासी से पाण्डवगण, भाग्यदेवता द्वारा प्रताड़ित ।
तब मध्यम पाण्डव भीमसेन से मैं हो गई प्रभावित ।।
कुन्ति देवी से आदेश लेकर ब्याह किया वृकोदर ।
साक्षी रहे समस्त वनलता, देवता और पाण्डव सहोदर ।।
एकाकिनी मैं घटोत्कच का लालन पालन किया ।
मातृत्व सुख से आप्लुत होकर मैं वात्सल्य रस में जिया
समर पारंगत हो गया, पुत्र मेरा एकलव्य सा निपुण ।
द्वन्द और मायायुद्ध से करता अरिकुल का दर्पचूर्ण ।।
मेरा समस्त सुखों का केन्द्रबिन्दु था - हे अनादि अनन्त ।
इस असहनीय अन्तर्द्वन्द को कैसे सहुँ - मरण पर्यन्त ।।
पुत्रहीन मैं जीवित शव हूँ, मेरा कष्ट-का-कीर्ण जीवन ।
सन्तानहीन मुझ अभागन का कान्हा आप ही अवलम्बन ।।
अंगराज के एकाहिन को मेरे वीरपुत्र ने झेला ।
निष्ठुर विधाता मुझसे ये क्या हृदयहीन खेल खेला ।।
वीरगति प्राप्त किया मेरे घटोत्कच ने धनञ्जय के लिये ।
द्वारकाधीश मैं जीवित रहूँ क्यों और किस प्रयोजन के लिये ।।
सम्पूर्ण जीवन मैंने विरह और अन्तर्धूम में रहा ।
वीरश्रेष्ठ की पत्नि होकर भी वैधव्य यंत्रणा सहा ।।
नयनमणि था मेरे पुत्र मेरा अन्धयष्टि सम ।
गोपीवल्लभ आप करें मेरे अन्तर्ज्वाला उपसम ।।
हस्तिनापुर राज्य जीतकर धर्मराज, प्रफुल्लित ।
इस हर्षोल्लास से समस्त नगरवासी हुए सम्मिलित ।।
अमुल्य निधि को खो दिया मैंने युद्ध हलाहल पर ।
चिरमुक्ति दें यशोदानन्दन विनती चरण कमल पर ।।
इस पिशाचिनी कुरूक्षेत्र को मैं दे रही हूँ श्राप ।
एक माँ का अन्तर्वेदना है ये नहीं पागल प्रलाप ।।
असंख्य, अनगिनत, अनाथ है कोखशुन्य माता ।
कौन है इसके उत्तरदायी है राधाकान्त, जगत परित्राता ।।
समस्या का चिर समाधान युद्ध कभी न हुआ है ।
अनन्त काल से युद्धाग्नि ने मानव को दानव बनाया है ।।
सुन लें मेरी विनति राधाकान्त रो रहा है अभागन ।
मेरे अन्तर्व्यथा पर प्रलेप दें, रो रहा मेरा अन्तर्मन ।।

मनोरंजन भकत
केन्द्रीय भण्डार, जादुगोड़ा

आज का ''कोविड-19'' का प्रभाव

दूरियाँ इतनी बढ़ जाएँगी, मालूम ना था
वो बाबु से बेवफा बन जाएंगे, मालूम ना था
हम उनके लिए पागल हो जाएँगे, मालूम ना था
जो अपना चेहरा हमारी आँखों में देखते थे वह आईना बदल जाएगा, मालूम ना था
ऐसे बरसेगी उसकी यादें सन्नाटे में, मालूम ना था
मुँह ढक कर पास से निकल जाएँगे, मालूम ना था
दूरियाँ इतनी बढ़ जाएँगी, मालूम ना था
जिससे खाने के बाद हाथ धोया करते थे, उसे अमृत समझ कर पीते हैं, मालूम ना था
जिसे पी कर हम हिला करते थे, उससे हाथ धो कर शकुन मिलता है, मालूम ना था
दूरियाँ इतनी बढ़ जाएँगी, मालूम ना था ।

अशोक कुमार कर
सहायक लेखा अधिकारी

जिंदगी

जिंदगी मुश्किलों से भरी है
फिर भी एक आस लिए खड़ा है
वक्त का पहिया घूमता है
परेशानियों का सिलसिला चलता है
जिन्दगी की धूप छाँव में
कभी खुशी कभी गम के गाँव में
ज्यादा गम तो, थोड़ी खुशियाँ दिलाता है
दुख-सुख का यह खेल जिन्दगी के साथ चलता है
निराशा की घड़ी में एक आस का दिया मन में जलाता है
इसलिए कहते हैं साहब
दिये जलाओ रोशनी करो,
उसका काम बुझाना है तो अपना काम है जलाना है ।

बि. वरुण कुमार रेड्डी
कर्मचारी संख्या - 271
तुम्मालापल्ली

कोरोना

कोरोना को करूणा से भगाना
आयी यह बड़ी बिमारी है
पड़ी सब पर भारी है
पहिया वक्त का घूम रहा है
सदा यह बिमारी फैला रहा है
सभी जन-मानस हो रहे परेशान
सभी को इसमे रखकर ध्यान
हम सब कर रहे इसकी रोकथाम
है दृढ़ विश्वास हमारा
जल्दी काबू में आएगी यह बिमारी
विश्वास का धागा टूट न पाए
जन-मानस तक यह संदेश फैलाएँ
क्योंकि कोरोना को करुणा से भगाना
कोरोना को करूणा से ही भगाना ।

नाम - एस. अतिया
क्रमचारी संख्या - 266
तुम्मालापल्ली

राजभाषा हिन्दी

वक्त आएगा, वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।
अम्माँ की ममता है हिन्दी
पापा का प्यार है हिन्दी
भाई का भरोसा है हिन्दी
अध्यापक का आर्शिवाद है हिन्दी

वक्त आएगा, वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।

ईब्राहिम लोदी का शासन है हिंदी
नरेन्द्र मोदी का पालन है हिन्दी
बंगाल के विभाजन का कारण है हिन्दी
सौराष्ट्र नागेश्वर का स्मरण है हिन्दी

वक्त आएगा, वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।

आन्ध्रा वाले बोल सकते हैं हैदराबादी हिन्दी
गुजराती बोल सकते हैं मारवाडी हिन्दी
पंजाबी बोल सकते हैं हरियाणवी हिन्दी
बिहारी बोल सकते हैं भोजपुरी हिंदी

वक्त आएगा, वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।

सुलतान कुतुबुद्दिन ऐबक के प्रिय खेल से ज्यादा है हिन्दी
सुलताना रचिया के प्रिय याकूत से ज्यादा है हिन्दी
बाबर के स्वरचित पुस्तक भी हिन्दी
अकबर की प्रिय गजल गीत भी हिन्दी

वक्त आएगा, वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।

नालंदा, तक्षशिला विश्वविद्यालय की प्रथम भाषा है हिन्दी
चीनी, जापानी, फुज़ी, ईरान, अफ्रिका की द्वितीय भाषा है हिन्दी
भारत अनुसंधान द्वारा 343 (1) भाषा भी हिन्दी
भगत सिंह के बंदूक की गोली जैसी है हिन्दी

वक्त आएगा, वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।

हिमालय के हिन्द कुश पर्वत जैसी स्थिर है हिन्दी
हिन्द महासागर के लहरों जैसी है हिन्दी
नेपाल के सागरमात के पर्वत से ऊँची है हिन्दी
प्रशांत महासागर से अधिक गहरी है हिन्दी
देश है हिन्दी वेश है हिन्दी
जन तन मन गन है हिन्दी
लाल बाल पाल की स्व रचित पुस्तक भी हिन्दी
गंगा गोदावरी सुवर्णरेखा सतलज नदी का प्रवाह है हिन्दी

वक्त आएगा वक्त आएगा चाँदी ।
विश्व की राज भाषा जरूर बनेगी हिन्दी ।।

पी. मेत्यानंद
कर्मचारी संख्या - 30006
तुम्मालापल्ली

कोरोना का संहार

जीवों में श्रेष्ठ माना जाने वाला मानव,
पूरे जीवमंडल पर राज करने वाला मानव
अपनी आकांक्षाओं के लिए सभी जीवों पर
आज त्राहिमाम-त्राहिमाम की गुहार लगाई है ।
क्योंकि चीन की वुहान से निकली कोरोना रूपी
इस महामारी ने पूरे विश्व में तांडव मचाई है,
मानवजाति की संहार इसने ठानी है ।

चाहे हो वो अमेरिका, रूस या हो जापान
सबके माथे पर शिकन आई है
आपदा की इस घड़ी में हमारे वेदों उपनिषदों
की बातों पर अमल करना पूरे विश्व को सिखायी है ।
भारतियों को जाहिल कहने वाले कभी,
आज भारतियों का लोहा माना है ।
क्योंकि चीन के वुहान से निकली कोरोना रूपी इस महामारी
ने पूरे विश्व में तांडव मचाई है ।
मानव जाति की संहार इसने ठानी है ।

कितने प्राणों का संहार और होना बाकी है
मानव जाति का संहार अब हमें ही रोकना है ।
न अस्त्र चाहिए न शस्त्र चाहिए,
स्वास्थ कर्मी एवं प्रशाषण के रूप में
भगवान स्वयं हमारे बीच आया है ।
इस महामारी के सुनिश्चित नियमों का पालन
हमें सुदृढ़ता से करना है,
कोरोना रूपी इस राक्षस को हमें ही दमन करना है ।

जिसने गरीबों से छीना निवाला, बच्चों से छीनी
किलकारी है, जिसने माता-पिता से संतान, संतानों से
माता-पिता, और साथी से जीवन साथी छीनी है ।
उस काल रूपी कोरोना का होगा संहार यह
हमने ठानी है ।
चीन की वुहान से निकली कोरोना रूपी इस महामारी
ने पूरे विश्व में जितनी भी तांडव मचाई है
भारत में आकर उसे अपने प्राणों की आहुती देनी है ।
क्योंकि मानवजाति की संहार को रोकना अब
हमने भी ठानी है ।

गोपी नाथ दास
कर्मचारी संख्या - 7594
तुम्मालापल्ली

मन की व्यथा

न जाने क्या नाज़ुक सा टूट रहा, मन के भीतर
क्या बताएँ कि सुकून-सा कुछ आता नहीं नज़र

लगता है मेरे अंदर ही बसा हो, जैसे इक शहर
खुद मुझको ही नहीं है, इस बात की कोई खबर

है कैसा आग़ाज ये, नहीं है अंजाम की फ़िकर
न जाने कैसा मर्ज है, दवा खुद बन गया जहर

बस चलते ही चले जा रहे, है कौन सी ये डगर
सारे ख्वाब बेतरतीब हुए हैं, ये कैसा है कहर

न जाने क्या तलाशती है, मेरी रूह मेरे ही अंदर
शायद ख़ुद से ही मिलना चाहती है, ये हर पहर

नयना कुमारी
सहायक अधीक्षक
सी.आ.एंड डी., जादुगोड़ा

कोरोना महामारी में समाज का कर्तव्य

कोरोना... कोरोना... कोरोना... एक ऐसा नाम जो शायद ही कोई इंसान चाहे बच्चा हो, बूढ़ा हो, महिला हो, या पुरुष हो, जवान हो परिचित न हो । एक ऐसा नाम जिससे शायद ही विश्व के कोई देश अछुता न रहा हो । एक ऐसा खौफ जिससे शायद ही किसी देश ने न डरा हो । एक ऐसी त्रासदी जिसने पुरी दुनिया में परिवर्तन ला दिया, एक ऐसा खौफनाक मंजर जो कई दशकों के बाद, यूँ कहें कि एक-दो पीढ़ियों के बाद लोगों ने देखी । एक ऐसी घटना, जो चीन प्रांत के वुहान शहर में जन्म लेकर विश्व की अर्थव्यवस्था को तहस नहस कर दिया है ।

शुरू से ही विश्व का ये इतिहास रहा है, कि जब भी कोई वैश्विक आपदा या वैश्विक महामारी आई है, पूरा विश्व समय रहते पूरी व्यवस्था के साथ एक मंच पे आया है, और आपदा के साथ सामुहिक लड़ाई लड़ी है ।

वर्तमान समय में ''कोरोना'' भी विश्व की एक ऐसी ही आपदा/महामारी है, जिसमें पूरे विश्व को एकजुट होकर लड़ने की जरूरत है । आज यह कोरोना वैश्विक महामारी का रूप ले चुकी है । इसलिए इसे ध्यान में रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति की अपनी जिम्मेदारी बनती है, कि इस घड़ी में अपना योगदान दे ।

अगर कोरोना की विकराल स्थिति की बात करें तो बहुत सारी कमियाँ, कमजोरियाँ उजागर हुई, जिसकी कीमत हमें इसकी भयावह से जूझना पड़ रहा है ।

सबसे बड़ी कमी यह देखी गई कि जिस देश में कोरोना का जन्म एवं भरणपोषण हुआ, उसी देश की सरकार ने, इससे पूरे विश्व को अवगत न कराकर, अंधेरे में रखा । दूसरी सबसे बड़ी कमजोरी ''विश्व स्वास्थ्य संगठन'' (WHO) की ओर से हुई, इन्होंने समय रहते, इसका अध्ययन ठीक से नहीं किया, और इसे अपने कार्यों के लिस्ट में 'सर्वोच्च' नहीं रखा, और बहुत दिनों तक इसे ''महामारी'' का नाम भी नहीं दिया, फलस्वरूप दुनिया के बाकी देशों ने भी इसे प्राथमिकता के साथ नहीं देखा अथवा बेखबर रहा । तीसरी बड़ी भूल, उन उन्नत, विकसित एवं शक्तिशाली देशों की ओर से भी हुई जिन्होंने ''कोरोना'' को महत्व नहीं दिया और हल्के से लिया । इन्हीं तीन प्रमुख कारवों से पूरा विश्व कोरोना की चपेट में समा गया, और न जाने कितने लोगों की आसस्मिक मृत्यू हो गई ।

जब दिन-प्रतिदिन हजारों की संख्या, कोरोना की चपेट में आने लगे, तब जाकर लोगों ने इससे बचने व सुरक्षित रहने की कोशिशें करने की शुरूआत की ।

चूँकि यह एक ऐसी बीमारी व महामारी है, जिससे वाहक/कारक एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सिर्फ संपर्क होने से ही फैलता है, तो इससे बचाव के लिए सामाजिक दायित्व बड़े मायने रखती है । इससे रोकथाम व बचाव हेतु सामाजिक स्तर से निम्नलिखित दायित्व बनते हैं :-

क) **जागरूकता :-** जागरूकता वह हथियार है जो कोरोना महामारी से बचने का कारगर साबित होती है । हमें अपने आस-पड़ोस में इस बिमारी के कारण लक्षण, संक्रमण रोकथाम पर विचार करना चाहिए इसके लिए लोगों को कुछ बिन्दुओं पर अमल करने के लिए प्रेरित करना चाहिए जैसे :

च) **सामाजिक दूरी -** यह अति आवश्यक है कि हमें आपस में कम से कम 2 मीटर (6 फीट) की उचित दूरी बना के रखनी चाहिए, चाहे घरवालों से हो या बाहरवालों से ।

छ) **अपने हाथों की सफाई –** हमें अपने हाथों को प्रत्येक 1 घंटे के अंतराल पर साबुन से धोते रहना चाहिए या फिर हाथ सैनीटाईजर (70% इथाईल एलकोहल) से वास करते रहना है । क्योंकि अधिकतर संभावना कोरोना विषाणु का हाथों में आने का रहता है ।

इसलिए अपने हाथों से बार बार आँख, नाक, मुँह को नहीं छूना चाहिए, क्योंकि इन्हीं जगहों से ये विषाणु, शरीर में प्रवेश करेंगे ।

ज) **निजी सुरक्षा किट का उपयोग –** सामाजिक दायित्व के अनुसार हमें जब भी घरों से बाहर जाना पड़े, कम से कम फेस मास्क जरूर लगाने की आवश्यकता है । साथ ही साथ हाथों में हैंड गलव्स पहनने की भी जरूरत है । अगर सुविधा हो तो चश्मे भी पहनने चाहिए ।

झ) **अनावश्यक घर से बाहर न निकलना –** हमें जरूरत से ज्यादा घर से बाहर नहीं जाना चाहिए, बहुत आवश्यक हो तब ही निकलना चाहिए ।

ञ) **भीड़ से बचाव –** हमें भीड़ भाड़ वाले जगहों में बिलकुल नहीं जाना चाहिए, क्योंकि ये कोरोना संक्रमण के अति संवेदनशील क्षेत्र होते हैं ।

ख) **सरकार की योजनाओं को बताना –** सरकार द्वारा चलाए जा रहे कोरोना मुक्त योजनाओं को समाज में हर व्यक्ति को बताना कर्तव्य है ।

ग) **कोरोना योद्धाओं का सम्मान –** इस मुश्किल की घड़ी में हमारे साथ डॉक्टर, नर्स, पुलिस व सारे ऐसे लोग जो प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं । उनका हौसला बढ़ाना है । उन्हें सम्मान देना है ।

घ) **असहाय लोगों को सहायता पहुँचाना –** ये भी समाज का एक महत्वपूर्ण योगदान है । जिन लोगों को कोरोना की वजह से खाने-पीने-रहने में दिक्कत हो रही हो उसे सहायता पहुँचाना परम कर्तव्य है ।

ङ) **सामाजिक कुरीतियों-छुआछूत/बहिष्कार रोकना –** वर्तमान समय में ऐसा देखा जा रहा है कि कोरोना पीड़ित व्यक्तियों को समाज में घृणा दृष्टि से देखा जा रहा है, उन्हें समाज से बहिष्कार किया जा रहा है, ऐसी रूढ़िवादी विचारों को खत्म करना भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व है ।

और अंत में कोरोना से जीत एवं देश के बचाव के लिए मानव जाति के साथ-साथ जीव-जन्तुओं से भी प्यार करने के लिए उत्प्रेरित करना है, ताकि पालतु जानवरों की भूख से मौत न हो ।

अब तक की वर्तमान स्थिति के अनुसार भारतवर्ष में लगभग 50 लाख लोग संक्रमित हुए एवं 50 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है । अगर हम अपने शहर की बात करें तो कुल 226 मौत, कोरोना से आजतक (13/09/2020) हुई है ।

अतः हमें सजग रहने की जरूरत है ।

नाम – जगदीश कुमार दास
पदनाम – फोरमेन (पर्यावरण)
कर्मचारी संख्या – 25358
तुरामडीह

कविता – 1

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती !

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती !!

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है !

चढ़ती दीवार पर सौ बार फिसलती है !

मन का विश्वास रगों में साँस भरता है !

चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना, न अखरता है !

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती !

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती !!

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगता है !

जा-जा कर खाली हाथ आता है !

मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में !

मुठ्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती !

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती !!

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो !

क्या कमी रह गई देखो, और सुधार करो !

जब तक न सफल हो ... नींद, चैन को त्यागो तुम !

संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम !

कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती !

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती !!

नाम – जगदीश कुमार दास

पदनाम – फोरमेन (पर्यावरण)

कर्मचारी संख्या – 25358

कविता – 2

क्या खूब लिखा है किसी ने

बक्श देता है खुदा उनको, जिनकी किश्मत खराब होती है,

वो हरगिज नहीं बक्शे जाते, जिनकी नियत खराब होती है ।

न मेरा एक होगा, न तेरा लाख होगा,

न तारीफ तेरी होगी, न मजाक मेरा होगा,

गुरूर न कर शाहे शरीर का,

मेरा भी खाक होगा, तेरा भी खाक होगा !

जिंदगीभर ब्रांडेड-ब्रांडेड करने वालों,

याद रखना .... कफन का कोई ब्रांड नहीं होता,

कोई रोकर दिल बहलाता है,

और कोई हँसकर दर्द छुपाता है !

क्या करामात है कुदरत का ....

जिंदा इंसान पानी में डूब जाता है,

और मुर्दा तैरकर दिखाता है !

मौत को देखा तो नहीं ....

पर शायद वो बहुत खुबसूरत होगी,

कमबक्त जो भी उससे मिलता है, जीना छोड़ देता है,

गजब की एकता देखी लोगों की जमाने में,

जिंदों को गिराने में और मुर्दों को उठाने में,

जिंदगी में न जाने कौन सी बात आखिरी होगी,

मिलते जुलते बातें करते रहो यारो ....

एक दुसरे से न जाने कौन सी मुलाकात आखिरी होगी !

नाम – जगदीश कुमार दास

पदनाम – फोरमेन (पर्यावरण)

कर्मचारी संख्या – 25358

कविता – 3

लौट जाता हूँ घर की तरफ हर रोज थका हारा
आज तक समझ नहीं आया कि
काम करने के लिए जीता हूँ, या जीने के लिए काम करता हूँ
बचपन में सबका बार-बार पूछा गया सवाल
बड़े होकर क्या बनना है ... ? जवाब अब मिला, फिर से
बचपन बनाना है
थक गया हूँ तेरी नौकरी से ऐ जिंदगी
मुनाशीब होगा, मेरा हिसाब कर दे
दोस्तों से बिछड़कर ये हकीकत खुली
बेशक कमिने थे, पर रौनक उन्हीं से थी
भरी जेब ने दुनिया की पहचान कराई
और खाली जेब ने अपनों की
जब लगे पैसा कमाना तो समझ आया
कि शौक तो माँ-बाप के पैसों से पूरे होते थे
अपने पैसों से तो बस जरूरतें ही पूरी हो पाती है
हँसने का दिल न हो तब भी हँसना पड़ता है
कोई जब पूछे कैसे हो .... ? मजे में हूँ कहना पड़ता है
ये जिंदगी का ड्रामा है दोस्तों, यहाँ हर एक को नाटक करना पड़ता है
माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती, यहाँ तो आदमी आदमी से जलता है
दुनिया के सांईटिस्ट ढूँढ रहे हैं कि मरीजों में जिंदगी है या नहीं पर आदमी यह नहीं ढूँढ रहा कि जिंदगी में खुशी है या नहीं
नींद और मौत में क्या फर्क है .... ?
किसी ने क्या खूब जवाब दिया है
नींद आधी मौत है, और मौत मुकम्मल नींद है
जिंदगी तो अपने ही तरिके से चलती है
औरों के सहारे तो जनाजे उठा करते हैं
सुबह होती है, शाम होती है, उम्र यूँ ही तमाम होती है
कोई रोकर दिल बहलाता है और कोई हँसकर दर्द छुपाता है
बस ये कंडक्टर सी हो गई है जिंदगी
सफर रोज का है और जाना भी कहीं नहीं
हर सवाल का जवाब मैं ढूँढता रहा और अपने कमरे में जाते ही जवाब मिल गया
छत ने कहा ऊँची सोच रखो,
पंखे ने कहा ठंडे से रहो
घड़ी ने कहा हर मिनट किमती है,
शीशे ने कहा कुछ करने से पहले अपने अंदर झाँक लो
खिड़की ने कहा दुनिया को देख लो,
कैलेंडर ने कहा अप टू डेट रहो
और दरवाजे ने कहा अपने मंजिल को पाने के लिए
पूरा जोर लगाओ
लकिरें भी बड़ी अजीब होती है
माथे पे खिँच जाए तो किश्मत बना देती है
जमीन पर खिँच जाए तो सरहद बना देती है
खाल पे खिँच जाए तो खून ही निकाल देती है
और रिश्तों पे खिँच जाए तो दिवार ही बना देती है।

नाम – जगदीश कुमार दास
पदनाम – फोरमेन (पर्यावरण)
कर्मचारी संख्या – 25358

हिंदी सप्ताह-2020 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

जादुगोड़ा

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

1.	श्री काशीनाथ चौधरी, कर्मचारी संख्या : 15293	प्रथम
2.	श्री रामचंद्र प्रसाद, कर्मचारी संख्या : 7376	द्वितीय
3.	श्री रौशन कुमार, कर्मचारी संख्या : 7581	तृतीय

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

1.	श्री सुकुमार दास, कर्मचारी संख्या : 7278	प्रथम
2.	श्री कृष्ण हाँसदा, कर्मचारी संख्या : 4576	द्वितीय
3.	श्री सुधीर मुण्डा, कर्मचारी संख्या : 7664	तृतीय

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता

1.	श्री सुकुमार दास, कर्मचारी संख्या : 7278	प्रथम
2.	श्री श्याम पदो दास, कर्मचारी संख्या : 3707	द्वितीय
3.	श्री छाडू मुर्मू, कर्मचारी संख्या : 7346	तृतीय

हिंदी सम-भाषण प्रतियोगिता

1.	श्री रौशन कुमार, कर्मचारी संख्या : 7581	प्रथम
2.	श्री जीतेंद्र सिंह, कर्मचारी संख्या : 4043	द्वितीय

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

1.	श्री काशीनाथ चौधरी, कर्मचारी संख्या : 15293	प्रथम
2.	श्रीमती सुमित्रा अधिकारी, कर्मचारी संख्या : 2775	द्वितीय
3.	श्री अशोक कुमार कर, कर्मचारी संख्या : 6664	तृतीय

हिंदी सप्ताह-2020 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

नरवापहाड़

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

1.	श्रीमती हेमलता पी. शिरोडकर, कर्मचारी संख्या : 3508	प्रथम
2.	श्री गाजिया हाँसदा, कर्मचारी संख्या : 15253	द्वितीय
3.	श्री रोमियो बास्के, कर्मचारी संख्या : 16015	तृतीय

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

1.	श्री रोमियो बास्के, कर्मचारी संख्या : 16015	प्रथम
2.	श्री जादुनाथ हाँसदा, कर्मचारी संख्या : 16034	द्वितीय
3.	श्री राधा गोविन्द सिंह, कर्मचारी संख्या : 15918	तृतीय

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता

1.	श्रीमती हेमलता पी. शिरोडकर, कर्मचारी संख्या : 3508	प्रथम
2.	श्री प्रहलाद चंद्र दास, कर्मचारी संख्या : 15026	द्वितीय
3.	श्री जादुनाथ हाँसदा, कर्मचारी संख्या : 16034	तृतीय

हिंदी सम-भाषण प्रतियोगिता

1.	श्री बाल कृष्ण मिश्रा, कर्मचारी संख्या : 15464	प्रथम
2.	श्रीमती राधा कुमारी, कर्मचारी संख्या : 7405	द्वितीय
3.	श्री भैरो रजक, कर्मचारी संख्या : 15210	तृतीय

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

1.	श्री बाल कृष्ण मिश्रा, कर्मचारी संख्या : 15464 एवं श्री भैरो रजक, कर्मचारी संख्या 15210	प्रथम
2.	श्री अजीत कुमार, कर्मचारी संख्या : 15390	द्वितीय
3.	श्रीमती राधा कुमारी, कर्मचारी संख्या : 7405	तृतीय

हिंदी सप्ताह-2020 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

तुरामडीह

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

1. श्रीमती शकुंतला समद, कर्मचारी संख्या : 25153 प्रथम
2. श्री जगदीश कुमार दास, कर्मचारी संख्या : 25358 द्वितीय
3. श्री तापस कुमार माझी, कर्मचारी संख्या : 4629 तृतीय

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

1. श्री प्रभात कुमार सिन्हा, कर्मचारी संख्या : 7264 प्रथम
2. श्रीमती शकुंतला समद, कर्मचारी संख्या : 25153 द्वितीय
3. श्री उमा शंकर प्रसाद, कर्मचारी संख्या : 4093 तृतीय

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता

1. श्री उमा शंकर प्रसाद, कर्मचारी संख्या : 4093 प्रथम
2. श्री तापस कुमार माझी, कर्मचारी संख्या : 4629 द्वितीय
3. श्रीमती सरस्वती मुर्मू, कर्मचारी संख्या : 20528 तृतीय

हिंदी सम-भाषण प्रतियोगिता

1. श्री श्रीनिवास कुमार, कर्मचारी संख्या : 25269 प्रथम
2. श्रीमती तारामती महतो, कर्मचारी संख्या : 25252 द्वितीय
3. श्री जगदीश कुमार दास, कर्मचारी संख्या : 25358 तृतीय

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

1. श्री श्रीनिवास कुमार, कर्मचारी संख्या : 25269 प्रथम
2. श्रीमती तारामती महतो, कर्मचारी संख्या : 25252 द्वितीय

हिंदी सप्ताह-2020 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

तुम्मालापल्ली

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

1.	श्री बी. वरूण कुमार रेड्डी, कर्मचारी संख्या : TP-271	प्रथम
2.	श्री पी. मेथ्यानंद, कर्मचारी संख्या : 30006	द्वितीय
3.	एस. अतिया, कर्मचारी संख्या : TP-266	तृतीय

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

1.	श्री गोपीनाथ दास, कर्मचारी संख्या : 7594	प्रथम
2.	श्री बी. वरूण कुमार रेड्डी, कर्मचारी संख्या : TP-271	द्वितीय
3.	श्री पी. मेथ्यानंद, कर्मचारी संख्या : 30006	तृतीय

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता

1.	श्री गोपीनाथ दास, कर्मचारी संख्या : 7594	प्रथम
2.	श्री पी. मेथ्यानंद, कर्मचारी संख्या : 30006	द्वितीय
3.	श्री बी. वरूण कुमार रेड्डी, कर्मचारी संख्या : TP-271	तृतीय

हिंदी सम-भाषण प्रतियोगिता

1.	श्री पी. मेथ्यानंद, कर्मचारी संख्या : 30006	प्रथम
2.	श्री बी. वरूण कुमार रेड्डी, कर्मचारी संख्या : TP-271	द्वितीय
3.	एस. अतिया, कर्मचारी संख्या : TP-266	तृतीय

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

1.	श्री पी. मेथ्यानंद, कर्मचारी संख्या : 30006	प्रथम
2.	श्री गोपीनाथ दास, कर्मचारी संख्या : 7594	द्वितीय
3.	एस. अतिया, कर्मचारी संख्या : TP-266	तृतीय

निम्नलिखित प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया :

सर्वश्री

जादुगोड़ा

1. श्रीमती चँद्रा सामंता, 7333
2. मनोरंजन भकत, 6948
3. तरुण कुमार, 4112
4. संजीवन कुमार दास, 7628
5. अमित प्रसाद, 7721
6. कु. नागी बेसरा, 7824
7. मनोज कुमार पात्रो, 4557
8. मो. आजाद खान, 6728
9. संजय हो, 7788
10. इम्तियाज अहमद, 7202
11. कु. सालगे माँझी, 7823
12. देब कुमार रॉय

नरवापहाड़

1. धनेश्वर प्रसाद, 15081
2. कृष्णा दास, 15651
3. कमल कुमार पात्रो, 3985
4. सालखु मुर्मू, 15985
5. सुनीता मुर्मू, 16024
6. आई. प्रीती, 16074
7. गुलीराम टुडू, 16049
8. सुब्रोतो कुमार गोप, 16034
9. गाजिया हाँसदा, 15253

तुरामडीह

1. सोनाली टुडू, 25453
2. रघु नाथ टुडू, 20424
3. सोहागी हेम्ब्रोम, 20519
4. संजना सामद, MC-6107
5. संयुक्ता कुमारी, 7406
6. देवाशीष पूयाल, 25375
7. कृष गुड़िया, 25421
8. सीता राम महतो, 20474
9. लक्षमण टुडू,
10. सुमिता महतो, 7414
11. अर्जुन कुमार साहु, 7249
12. राजेश कुमार, 20118
13. अंजली हेम्ब्रम, C-5872

गणतंत्र दिवस का आयोजन

दिनांक 26 जनवरी, 2020

स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

दिनांक 15 अगस्त, 2020